
* श्रीः *

विष्णुसहस्रनाम

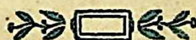
भाषा टीका सहितः।



मथुरा निवासी श्रीकृष्णलाल
द्वारा अनुवादित।

प्रकाशक—

किशनलाल द्वारकाप्रसाद,
बम्बई भूषण प्रेस, मथुरा।



मूल्य ।) आना



* श्रीः *

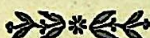
॥ विष्णुसहस्रनाम ॥



मथुरा निवासी

श्रीकृष्णलाल कृत

भाषा टीका सहित ।



मुद्रक व प्रकाशक—

किशनलाल द्वारकाप्रसाद,

बम्बई भूषण प्रेस, मथुरा ।

सन् १९३५ ई०

प्रकाशकः—

किशनलाल द्वारकाप्रसाद,

बम्बई भूषण प्रेस मथुरा।



मुद्रकः—

द्वारकाप्रसाद भरतिया,

बम्बई भूषण प्रेस मथुरा।

भूमिका ।

धर्मपुत्र राजा युधिष्ठिर ने कलियुगी जीवों को निराधार और दुःखी देख शोक संतप्त होकर भीष्मजी से इनके उद्धारार्थ प्रश्न किया, भीष्मपितामह ने विष्णुभगवान् के इस सहस्र नाम का उपदेश किया कारण—

नाम्नोऽस्ति यावती शक्तिः पापनिर्हरणे हरेः ।
तावत्कर्तुं न शक्नोति पातकं पातकी नरः ॥

विष्णु भगवान् के नाम में पाप दूर करने की जितनी शक्ति है, पापी मनुष्य उतने पाप भी नहीं कर सक्ता है, सहस्रनाम में प्रभून के नाम गुणानुरूप ध्यान करके नामस्मरण ही इस कलिकाल में मोक्ष का अवलम्बन है स्वयं भगवान ने कहा है—

नाऽहं वासामि बैकुण्ठे योगिनां हृदये न च ।
मद्भक्ता यत्र गायन्ति तत्र तिष्ठामि नारद ॥

नारदजी ने भगवान् से पूछा कि आपका मिलने का स्थान कहां है ? प्रभु ने हंस कर उत्तर दिया, यदि बैकुण्ठ में प्राणी मेरे पाने की इच्छा करे,मैं वहां नहीं मिलूं, योगियों के हृदय में भी मेरा निवास नहीं है, मैं केवल भक्ति के आधीन हूं, जहां भक्तजन प्रसन्न चित्त से मेरे गुण संकीर्तन करें, वहीं मेरे रहने का स्थान है, अर्थात् मैं अपने भक्तों के क्लेशादि दूर करने को सर्वत्र सदैव विद्यमान हूं, अतएव मनुष्य जो मोक्ष प्राप्ति की इच्छा करें वे इस सहस्रनाम सोपान का अवलम्बन करें ।

आबाल वृद्ध सबही वैष्णव लोग इस अमूल्य रत्न का पाठ करते हैं, परन्तु बहुत कम मनुष्य ऐसे हैं जो नामार्थ से अभिज्ञ हों, केवल शुकवत् "राधाकृष्ण, राधाकृष्ण" रटे चले जाते हैं, परन्तु प्रश्न करने पर मूक होजाते हैं, कुछ उत्तर नहीं बन पड़ता, इसी अभिप्राय से मैंने महर्षि श्रीशङ्कराचार्य के भाष्यानुसार ब्रज भाषा में बहुत सुगम शब्दों में नामार्थ किया है, अर्थ के ज्ञान सहित नामस्तुति करने से "अधिकस्य-ऽधिकफलम्" बहुत ही फल मिलेगा और प्रभु के गुणों में चित्त सन्निविष्ट होजायगा।

पहले भी इस सहस्रनाम की कई टीका हो चुकी हैं और वे मेरे सब दृष्टिगोचर हुईं, परन्तु उनमें से कई टीका ऐसी कठिन हैं और कुढङ्ग से छपी हैं कि मूल के अर्थ का समझना तो दूर रहा, टीका भी समझ में नहीं आती, टीका भी टीका की अपेक्षा रखती है, कइयों में कुछ न्यूनता रह गई है अतएव मैंने बहुत सुगम अर्थ किया है, जो सर्व साधारण की समझ में बिना प्रयास आजावे॥ इति शुभम्॥

कृष्णलाल मथुरानिवासी।

ॐ

परमात्मने नमः ।

विष्णुसहस्रनामार्थ ।



यस्य स्मरणमात्रेण जन्मसंसारबन्धनात् ।
विमुच्यते नमस्तस्मै विष्णवे प्रभविष्णवे ॥ १ ॥

अर्थ–जिसके केवल स्मरण ही से जीव आवागमन और संसार के लोभ मोहादिक बंधन से छूटकर मोक्ष पावे है उस सर्वव्यापक सर्वशक्तिमान् विष्णुके अर्थ नमस्कारहै।१

नमः समस्तभूतानामादिभूताय भूभृते ।
अनेकरूपरूपाय विष्णवे प्रभ विष्णवे ॥ २ ॥

अर्थ—सम्पूर्ण प्राणीन के आप आदिभूत हैं, अनेक रूपनमें विद्यमान हैं, ऐसे आप सर्वव्यापक विष्णु के अर्थ नमस्कार है ॥ २ ॥

वैशम्पायन उवाच ।

श्रुत्वाधर्मानशेषेण पावनानि च सर्वशः ।
युधिष्ठिरः शान्तनवं पुनेरवाभ्यभाषत ॥ ३ ॥

अर्थ–वैशम्पायनजी बोले हे जनमेजय ! राजा युधिष्ठिर,

मन कर्म वाणी से तीनों पापोंको नाश करने वाले, सम्पूर्ण वेदोक्त को सब प्रकारसे सुनकर शांतनु पुत्र पितामह से फिर पूछते भये ॥ ३ ॥

युधिष्ठिर उवाच ।

किमेकं दैवतं लोके किं वाप्येकं परायणम् ।
स्तुवन्तः कंकमर्चन्तःप्राप्नुयुर्मानवाःशुभम्।४

अर्थ—राजा युधिष्ठिरने पूछा कि हे महाराज! संसारमें एक सर्वेश्वर सर्वशक्तिमान् देवता कौन है ? और सबसे परे एक स्थान कौनसा है ? (जहां हृदयके दुर्विचार और संशय मिटजातेहैं) और किस देवता के गुण संकीर्तन करें और किस देवता की कायिकमानसिक पूजा करने से मनुष्य कल्याण रूप स्वर्गादि फलको प्राप्त होवें॥ ४ ॥

को धर्मः सर्वधर्माणां भवतः परमो मतः ।
किंजपन्मुच्यतेजंतुर्जन्मसन्सारबन्धनात् ॥५॥

अर्थ—हे महारज ! सम्पूर्ण धर्मन में कौनसा धर्म आपको परम मन्तव्य है किसके जप करने से प्राणीमात्र जन्ममरण और अविद्यारूप सांसारिक बन्धनसे छूट परम गति पाते हैं॥५॥

इस प्रकार युधिष्ठिर ने भीष्मजीसे छः प्रश्न किये अनंतर भीष्मजी कहने लगे—

भीष्म उवाच ।

जगत्प्रभुं देवदेवमनन्तं पुरुषोत्तमम् ।
स्तुवन्नामसहस्रेण पुरुषः सततोत्थितः॥६ ॥
तमेव चार्चयन्नित्यं भक्त्या पुरुषमव्ययम् ।
ध्यायन् स्तुवन्नमस्यंश्च यजमानस्तमेव च॥७॥
अनादिनिधनं विष्णुं सर्वलोक महेश्वरम् ।
लोकाध्यक्षंस्तुवन्नित्यंसर्वदुःखातिगोभवेत्॥८॥

अर्थ—निरन्तर प्रयत्नवान् पुरुष, स्थावर जंगमके स्वामी, देवोंके देव, अनंत पुरुषोत्तम भगवान् की सहस्रनाम से स्तुति करै और उन्हीं अविनाशी सर्वशक्तिमान् की प्रतिदिन पूजा ध्यान, स्तुति और नमस्कार करता रहै, और आदि मध्यान्तरहित सर्वव्यापक लोकोंके स्वामी विष्णु भगवान् की नित्य स्तुति करै तो प्राणी कायिक वाचिक मानसिक पापो से छूट मोक्ष पावे॥६॥७॥८॥

ब्रह्मण्यंसर्वधर्मज्ञं लोकानां कीर्तिवर्धनम् ।
लोकनाथं महद्भूतं सर्वभूतभवोद्भवम्॥ ९ ॥

अर्थ—कैसे हैं विष्णु भगवान् ब्रह्मा और ब्राह्मणों के हितकारक, संपूर्ण धर्मन के जानने वाले, प्राणीन की यश और कीर्ति के बढ़ाने वाले, लोकोंके स्वामी, परमार्थ सत्य, सब चराचरके उत्पत्तिस्थान हैं ॥ ९ ॥

एष मे सर्वधर्माणां धर्मोऽधिकतमो मतः।
यद्भक्त्या पुंडरीकाक्षंस्तवैरर्चेन्नरः सदा ॥१०॥

अर्थ—संपूर्ण वेद लक्षण धर्म में यही धर्म मुझे अधिकतम अभीष्ट है कि, मनुष्य सदा गुणसंकीर्तन करके भक्तिपूर्वक पुंडरीकाक्षकी स्तुति करता रहै क्योंकि, विष्णुपुराण में कहा भी है "ध्यायन् कृते यजन यज्ञैस्त्रेतायां द्वापरेऽर्चयेत्। यदाप्नोति तदाप्नोति कलौसंकीर्त्य केशवम्" ॥ जो फल सत्ययुग में ध्यान से, त्रेतामें यज्ञादिकसे, द्वापर में पूजन से मिलता था सो फल इस कलिकाल में केवल नामसंकीर्तन से मिलता है॥१०॥

परमं यो महत्तेजः परमं यो महत्तपः।
परमं यो महद्ब्रह्म परमंयः परायणम् ॥११॥

अर्थ—जिसके तेजसे सूर्य, चन्द्र, तारागण, सब ज्योतिष्मान् पदार्थ प्रकाशित हैं, और परम सत्यस्वरूप हैं, परब्रह्म हैं और परायण, अर्थात परम धामहैं जहां मोक्ष चाहने वाले जीवों को अनंत सुख मिलता है॥११॥

पवित्राणां पवित्रं यो मङ्गलानां च मङ्गलम्।
दैवतं देवतानांच भूतानां योऽव्ययः पिता॥१२॥

अर्थ—पवित्रों को भी पवित्र करने वाले मंगलपदार्थोंके मङ्गलदाता और ब्रह्मादि देवताके भी पूज्य, उपास्य देवता

और चराचरके नियंता, कर्ता त्रिकालके अविनाशी विकार रहित, सबके रक्षा करने वाला परमात्मा है केवल विष्णु के ध्यान संकीर्तन में संपूर्ण तीर्थादिक का फलहै॥१२॥

यतः सर्वाणि भूतानि भवन्त्यादियुगागमे।
यस्मिंश्च प्रलयं यान्ति पुनरेव युगक्षये॥१३॥

अर्थ—जिस परमात्मा से कल्पके आदि में सब चराचर स्थावर जंगम उत्पत्ति होतेहैं उसी परमात्मामें महाप्रलयके समय सब लीन हो जाते हैं जैसे पानी का बबूला पानी से बनकर पानी में समाय जाता है ॥१३॥

तस्य लोक प्रधानस्य जगन्नाथस्य भूपते ।
विष्णोर्नामसहस्रं म शृण पापभयापहम्॥१४॥

अर्थ—उसी लोकन के आदिकारण, जगत्पत्ति सर्वव्यापक विष्णु को अशुभ कर्मादि पापन को नाश करने वाले इस दिव्यसहस्रनामको एकाग्रचित्त होकर मुझसे सुनो ॥१४॥

यानि नामानि गौणानि विख्यातानिमहात्मनः
ऋषिभिःपरिगीतानितानिवक्ष्यामिभूतये॥१५॥

अर्थ—मंत्रद्रष्टा ऋषियों ने जो प्रभुके नाम प्रभुके गुणन से गाये हैं उनमें जो अर्थ धर्म काम मोक्ष के देने वाले प्रसिद्ध नाम सो मैं प्राणीन के हितार्थ कहूं हूँ॥१५॥

ऋषिर्नाम्नां सहस्रस्य वेदव्यासो महामुनिः ।

छंदोऽनुष्टप् तथा देवो भगवान्देवकीसुतः॥१६॥

अर्थ—महर्षि वेदव्यासजी इस विष्णुसहस्रनाम के ऋ हैं अनुष्टुप् छंद है और भगवान् देवकीपुत्र श्रीकृष्णच जी देवता हैं ॥ १६ ॥

विष्णुं जिष्णुं महाविष्णुं प्रभविष्णुं महेश्वरम्
अनेकरूपदैत्यान्तं नमामि पुरुषोत्तमम्॥१७

अर्थ—सर्वव्यापक शत्रुन के नाशकर्ता महा विष्णु स उत्पत्तिकारण महेश्वर अनेकरूप धारणकर दैत्यनके सं कर्ता पुरुषोत्तम भगवान्के अर्थ मेरी नमस्कार है ॥१७॥

ॐ अस्यश्रीविष्णोर्दिव्यसहस्रनामस्तो मालामन्त्रस्य श्रीभगवान्वेदव्यासऋषिरनुष्टप् छन्दः, श्रीकृष्णःपरमात्मादेवता, आत्मयोनि स्वयंजात इति बीजम्, देवकीनन्दनः स्रष्टेति शक्तिः, उद्भवःक्षोभणो देव इति परमोमंत्र शंखभृन्नन्दकी चक्रीति कीलकम्, श्रीकृष्ण प्रीत्यर्थे सहस्रनामस्तोत्रजपेविनियोगः ॥

अर्थ—इस विष्णुके दिव्य सहस्रनाम के ऋषि वेदव्य हैं, अनुष्टुपछन्द [बत्तीस बत्तीस अक्षर के] श्रीकृ परमात्मा देवता हैं, आत्म योनिः स्वयं जात यह बीज देवकीनन्दनः स्रष्टा यह शक्ति है, उद्भवःक्षोभणो देव

परम मंत्र है, शंखभृन्नन्दकीचक्री यह कीलकहै, ऐसेदिव्य सहस्रनामका मैं श्रीकृष्णके प्रसन्न करनेके हेतु पाठकरूं हूं॥

अथ अङ्ग न्यासः

ॐ शिरसि श्रीवेदव्यासऋषये नमः॥ ॐ मुखेअनुष्टुप् छंदसेनमः ॐ हृदिश्रीकृष्णपरमात्मदेवताये नमः॥ ॐ सर्वांगशङ्खभृन्नन्दकी चक्रीति कीलकायनमः॥

अथ करन्यासः।

ॐ उद्भवाय अंगुष्ठाभ्यान्नमः॥ ॐ क्षोभणाय तर्जनीभ्यां नमः ओ३म् देवाय मध्यमाभ्यां नमः॥ ओ३म् उद्भाय अनामिकाभ्यां नमः॥ ओ३म् क्षोभणाय कनिष्ठाकाभ्यां नमः॥ ओ३म् देवाय करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

अथ हृदयादि न्यासः।

ओ३म् विश्वंविष्णुंर्वषट्कारेइतिहृदयागमनः॥ अमृतां शूद्भवोभानुरितिशिरसे स्वाहा॥ ब्रह्मण्योब्रह्मकृद्ब्रह्मोति शिखायैवषट्॥ सुवर्ण विंदुरक्षोभ्यइति कवचाय हुं॥ आदित्योज्योतिरादित्य इति नेत्रत्रयाय वौषट्। शार्ङ्गधन्वागदाधर इत्स्त्रायफट्॥

इन तीनों न्यासों का अभिप्राय यह है, कि पाठ करने वाला यह संकल्प करके पाठ करे कि मेरे अंग प्रत्यंग सब श्रीकृष्ण के अर्पण हैं और जब अंगप्रत्यंग भग-

वान के अर्पण कर दिये तो चित्त की वृत्ति भी एकाग्र होजाती है ॥

अथ ध्यानम्।

शांताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशम्।
विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभांगम्॥
लक्ष्मीकान्तंकमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यम्।
वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम् ॥१॥

अर्थ—शांत स्वरूप, शेषशायी, नाभिमें कमल धारण करनेहारे, देवनके देव, विश्वके आधार आकाशके समान व्यापक मेघ के समान नीलवर्ण, शोभायुक्त जिनके अंग लक्ष्मीनाथ कमलनयन, योगीजनों के ध्यान में आनेवाले सम्पूर्ण लोक के नाथ संसारिक भय के दूरकर्ता, व्यापक विष्णु के अर्थ मेरी नमस्कार है ॥ १ ॥

ॐ विश्वं विष्णुर्वषट्कारो भूतभव्यभवत्प्रभुः।
भूतकृद्भूतभृद्भावो भूतात्मा भूतभावनः ॥१॥
पूतात्मा परमात्मा च मुक्तानां परमागतिः।
अव्ययः पुरुषःसाक्षी क्षेत्रज्ञोऽक्षर एव च ॥२॥
योगो योगविदांनेता प्रधान पुरुषेश्वरः।
नारसिंहवपुः श्रीमान् केशवः पुरुषोत्तमः ॥३॥

अर्थ—सर्वत्र बाहर भीतर और जगत्‌में प्रवेश करनेवाले

आप विश्व (१) है चराचरमें व्यापकहोनेसे आपविष्णु हैं आप यज्ञादि क्रियों से मूल कारण होने से वषट्कार (३) हैं, भूत भविष्यत् वर्तमान तीनों कालों के स्वामी होने से आप भूतभव्यभवत्प्रभु [४] हैं, स्वयं जीवों को उत्पन्न करने से आप भूतकृत [५] हैं, प्राणियों के धारण पोषण करनेसे आपभूतभृत[६]हैं,प्रपंचरूप से संसारको धारण करने से आप भाव [७] हैं, प्राणिन की आत्मा के अन्तर्यामी होने से आप भूतात्मा [८] हैं, आप प्राणियों को प्रेरणा करते और उनकी वृद्धि करते हैं इससे पूतभावन [९] हैं, आत्माओं के पवित्र करने से आप पूतात्मा [१०] हैं. कार्य कारण से परे नित्य शुद्ध ज्ञान स्वभाव परम आत्मा होने से परमात्मा [११] हैं, मुमुक्षु जहां से फिर नहीं आते हैं क्योंकि गीता जी में भी कहा है" मामुपेत्य तुकौंतेय पुनर्जन्म न विद्यते " इससे आप मुक्तानांपरमगति [१२] हैं अविनाशी होने से आप अव्यय [१३] हैं नवद्वार के पुररूपी देह में निवास करने से आप पुरुष [१४] हैं, सब पदार्थों को साक्षात देखने सेसाक्षी[१५]हैं शरीरों को जानने से आप क्षेत्रज्ञ[१६ हैं, किसी काल में क्षय नहीं होते इससे अक्षर [१७] हैं, जीव और परमात्मा के योग से आप योग [१८]

हैं योगियों के प्रेरक होने से आप योगविदांनेता [१९] हैं, आप प्रकृति और पुरुषके ईश्वरहैं इससे प्रधानपुरुषेश्वर [२०] हैं मनुष्यों के पाप कर्मादि दूर करने के हेतु आप नृसिंहवपु [२१] हैं वक्षःस्थल में लक्ष्मी के निकट निवास करने से आप श्रीमान् [२२]हैं, सुन्दर केशों के होने से अथवा ब्रह्मा विष्णु महेष के स्वामी होने सेअथवा केशीनाम दैत्य के मारने से आप केशव (२३) हैं पुरुषों से उत्तम होने से आप पुरुषोत्तम [२४] हैं,॥२॥

सर्वः शर्वः शिवः स्थाणुर्भूतादिर्निधिरव्ययः ।
सम्भवो भावनो भर्ता प्रभवः प्रभुरीश्वर ॥ ४॥

अर्थ—सब काल और सब जगह और सबके उत्पत्ति कर्ता होने से आप सर्व (२५) हैं, दुःख को दूर करने और सुख देने से आप शर्व (२६) हैं, कल्याण रूप होने से आप शिव (२७) हैं, अचल और व्यापक होने से आप स्थाणु (२८) हैं, आप चराचर के आदि कारण हैं इससे भूतादि (२९)हैं, आप अक्षय भंडार हैं, इससे निधिरव्यय (३०) हैं, गर्भादि क्लेशोंसे रहित धर्मकीरक्षा के निमित्त अपनी इच्छा से प्रकट होते हैं, इससे आप संभव (३१) हैं, सम्पूर्ण फलों के दाता होने से आप भावन (३२) हैं, संसार को धारण करने से आप भर्ता [३३]

आपही से सब वस्तु जन्म लेती हैं, इससे आप प्रभव (३४) हैं, सम्पूर्ण क्रियान में आप समर्थ हैं, इससे प्रभु (३५) हैं उपाधि रहित ऐश्वर्य के होने से आप ईश्वर (३६) हैं, ॥ ४ ॥

स्वयम्भूः शम्भुरादित्यः पुष्कराक्षो महास्वनः।
अनादिनिधनो धाता विधाता धातुरुत्तमः॥५॥

अर्थ—आप स्वयं प्रकट होते हैं इससे स्वयंभु (३७) हैं, कल्याण करने वाले हैं इससे आप शम्भु (३८) हैं, अनेक शरीरों में आप भिन्न दृष्टि आते हैं, पर वास्तव में एकही हैं, इससे आप आदित्य (३९) हैं, भक्तों परआप कोमल कमल सी दृष्टि से देखते हैं, इससे आप पुष्कराक्ष (४०) हैं, आपका वेद रूप बड़ा शब्द है, इससे आप महास्वन (४१) हैं, जन्म और विनाश से रहित होने के कारण आप अनादिनिधन (४२) हैं, अनंत रूपसे विश्व को धारण करते हैं इससे धाता (४३) हैं, शेषादि पृथ्वी धारण करने वालों को भी धारण करने से विधाता (४४) हैं; ब्रह्मादिकों से आप उत्कृष्ट हैं. इससे आप धातु-रुत्तम (४५) हैं, ॥ ५ ॥

अप्रमेयो हृषीकेशः पद्मनाभोऽमरप्रभुः ।

विश्वकर्मामनुस्त्वष्टा स्थविष्ठःस्थविरोध्रुवः॥६॥

अर्थ—आप प्रमाण रहित हैं, इससे अप्रमेय (४६) हैं.इन्द्रियों के स्वामी हैं इससे आप हृषीकेश (४७) हैं, जगत् के उत्पत्ति हेतु कमल आपकी नाभि में है इससेआप पद्मनाभ [४८] हैं; देवतानके स्वामी होने से आप अमर प्रभु (४९) हैं,यह विश्व आपकी रचना है, इससे आप विश्वकर्मा (५०) हैं आप मनन करने के योग्य हैं इससे आप मनु (५१) हैं, सब पदार्थों में आपही का प्रकाश है, इससे आप त्वष्टा (५२) हैं, अति स्थूल विश्व रूप होने से आप स्थविष्ठ (५३) हैं, आप त्रिकाल में स्थिर इससे आप स्थविर (५४) हैं,सबकाल और सब वस्तुन में अचलहोनेसे आप ध्रुव (५५)हैं, ॥ ६ ॥

अग्राह्यः शाश्वतः कृष्णो लोहिताक्षः प्रतर्दनः।
प्रभूतस्त्रिककुब्धाम पवित्रं मंगलं परम् ॥ ७॥

अर्थ—पन्चेन्द्रिय करके ग्राह्य नहीं इससे आग्राह्य कहते हैं, क्योंकि, श्रुतिभी कहै हैं "यतो वाचो निवर्तते अप्राप्य मनसा सह" मन और वाणी आपको ग्रहण नहीं कर सकीं इससे आप अग्राह्य (५६) हैं, भूत भविष्य वर्तमान आपके निकट एकसा है, इसस आप शाश्वत(५७) हैं, श्याम वर्ण होने से आप कृष्ण (५८) हैं, (कृषिर्भुवा-

चक है, और ण निवृति वाचकहै. इनके संयोग से आप परब्रह्म कृष्ण हैं,) पापियों पर लाल नेत्र करने से आप लोहिताक्ष (५९) हैं. प्रलय कालमें सबकानाश करने से आप प्रतर्दन (६०) हैं, ज्ञान और ऐश्वर्यादि षड्गुण सम्पन्न होने से आप प्रभूत (६१) हैं, आपका तीनों लोकन में प्रकाशहै, इससे आप त्रिककुब्धाम (६२) हैं, पवित्रों को भी पवित्र करने से आपपवित्र(६३)हैं, नित्य मंगल रूप जो ब्रह्मानन्द उससे परे होने से आप मंगलपर (६४) हैं ॥ ७ ॥:—

ईशानः प्राणदः प्राणो ज्येष्ठः श्रेष्ठः प्रजापतिः
हिरण्यगर्भो भूगर्भो माधवः मधुसूदनः ॥८॥

अर्थ—प्राणीमात्र को वशीभूत रखने से आप ईशान (६५)हैं. आप प्राणों को देने वाले हैं और काल रूप धारण कर प्राण को हरने वाले हैं इससे आप प्राणद (६६) है, प्राणन के भी प्राण होने से आप प्राण (६७) हैं,सबमें बड़े होने से आप ज्येष्ठ (६८)हैं सबसे अधिक स्तुति के योग्य होने से आप श्रेष्ट (६९) हैं प्रजा के पति होने से आप प्रजापति (७०) हैं, प्रकाश आपके गर्भ में है इससे आप हिरण्यगर्भ (७१) हैं, पृथ्वी आपके भीतर है, इससे आप भूगर्भ (७२) हैं लक्ष्मी के

पति हैं, इससे अथवा मधु (विद्या) के जानने के यो
अथवा मौन से ध्यान करनें के योग्य होने से भी
माधव (७३) हैं, मधु दैत्य के मारनें से आप मधुसू

ईश्वरो विक्रमी धन्वी मेधावी विक्रमः क्रमः
अनुत्तमो दुराधर्षः कृतज्ञः कृतिरात्मवान् ॥

अर्थ—सर्व शक्तिवान् होनें से आप ईश्वर (७५)
शूरवीर होने से आप विक्रमी (७३) हैं, दिव्य धनुष
री होनें से क्योंकि„ राम शस्त्र भृतामहम् " आपका क
है कि धनुषधारियों में मैं राम हूं। आप धन्वी (७
आपको स्वाभाविक ज्ञान है और वहुत ग्रंथ धारण क
की शक्ति है इससे आप मेधावी (७८) ह, बिना ग
आप विश्व भर में जाते हैं इससे आप विक्रम [७६]
सब जगत को आच्छादन करने से आप क्रम [८०]
आपसे उत्तम कोई नहीं आपका ज्ञान अत्युत्तम है, इ
आप अनुत्तम [८१] हैं, आपको कोई धर्षणा नहीं
सक्ता इससे आप दुराधर्ष (८२) हैं, प्राणियों के कि
काम को जानते हैं, इससे आप कृतज्ञ(८३)हैं, कार्य स
होने से आह कृति (८४) हैं आपके अनेक जीवात्मा
अर्थात् आप अपनी महिमा में प्रतिष्ठित हैं, इससे आ
आत्मवान (८५) हैं, ॥९॥:—

सुरेशः शरण शर्म्म विश्वरेताः प्रजाभवः।
अहः संवत्सरो व्यालःप्रत्ययः सर्वदर्शनः॥१०॥

अर्थ—देवताओं के स्वामी होने से आप सुरेश (८६) हैं, दुखियों के दुःख दूर करने से आप शरण (८७) हैं, परमानन्द रूप होने से शर्म्म (८८) हैं, विश्वके आदिकारण होने से आप विश्वरेता (८९) हैं; सब प्रजा आप से उत्पन्न हुई इससे आप प्रजाभव (९०) हैं, प्रकाश रूप हैं इससे आप अयः (९१) हैं, काल रूप करके स्थिति होने से आप संवत्सर (९२) हैं, व्याल की नाईं ग्रहण नहीं किये जाओ इससे व्याल (९३) हैं विश्वास करने वाले को आप विश्वास देते हैं इससे प्रत्यय (९४) हैं;साक्षात रूप सबको देखने से आप सर्वदर्शन ९५ ॥१०॥:—

अजःसर्वेश्वरःसिद्धःसिद्धिःसर्वादिरच्युतः।
वृषाकपिरमेयात्मा सर्वयोगविनिः सृतः॥११॥

अर्थ—आप पैदा हुए न होंय इससे अज [९६] हैं, ब्रह्मादि के ईश्वर होने से आप सर्वेश्वर [९७] हैं, एक रस होने से आप सिद्धि [९८]हैं,स्वर्गादि प्राप्त होनेसे आप सिद्ध रूप हैं इससे सिद्ध [९९]हैं सब जीवों के आदिकारण होने से सर्वादि[१००] हैं, नाशरहित होने से

अच्युत[१०१]हैं सब कामनान के वर्षा करने वाले आप
पृथ्वीको जल से उधारनेवाले हैं इससे वृषाकपि[१०२]न
हैं आपकी आत्मा का कोई प्रमाण नहीं कर सक्ता इ हेतु
अमे यात्मा[१०३]हैं, सब संबंधसे पृथक् और योग
ग्राह्य इससे आप सर्वयोगविनिःसृत [१०४]हैं,॥११॥:-

वसुर्वसुमनाःसत्यः समात्मा संमितः समः।
अमोघःपुंडरीकाक्षो वृषकर्मा वृषाकृतिः॥१२॥

अर्थ—सब प्राणियों में आप बासकरते हैं और
में सब वासकरते हैं इससे वसु[१०५] हैं, रागद्वेष
क्लेशों से निष्पाप और प्रशस्त मन हैं इससे वसुम
१०६ हैं; श्रुति कहती है"सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म" हैं
का ज्ञान सत्य है, इससे सत्य १०७ हैं सब में स
बुद्धि, और समान आत्मा होने से आप समात्मा१
हैं, सब में अलग अलग हैं, और एक भी हैं,इससे सं
१०९हैं; सब कालों में सब प्रकार के विकारों से र
और लक्ष्मीसहित हैं; इससे सम ११० हैं पूजा
स्मरण से अमोघ फल देते हैं, इससे अमोघ ११
कमलरूप हृदय में योगीजनों से पूजितहैं और कमलसे
हैं इससे आप पुंडरीकाक्ष ११२हैं धर्म ही है
आपका इससे वृषकर्मा११३है, धर्म ही है आ

आपकी इससे वृषाकृति११४हैं क्योंकि "धर्मसंस्थापनार्थाय संभावमि युगे युगे" आपका वाक्य हैकि धर्म के हेतु मैं युगयुग मे अवतार धारण करता हूं॥१२॥:—

रुद्रो बहुशिरा वभ्रुर्विश्वयोनिः शुचिश्रवाः।
अमृतःशाश्वतःस्थाणुर्वरारोहोमहातपाः॥१३॥

अर्थ—प्रलय काल में सब का संहार और सब का दुःख दूर करते इससे आप रुद्र ११५ हैं, "सहस्त्रशीर्षा पुरुषः" ऐसी श्रुति है आप के असंख्य शिर हैं इससेबहुशिरा ११६ हैं, समस्त लोकों को धारण करने से वभ्र ११७ हैं विश्व आपही से उत्पन्न हुआ इससे विश्वयोनि ११८ हैं, आप ही हैं कल्याण कारक और सुनने के योग्य हैं नाम आप के इससे शुचिश्रवा ११९ हैं, मृत्यु से आप अलग हैं इसमे अमृत १२० हैं; निरन्तर अचल स्थित होने से शास्वतस्थाणु १२१हैं, श्रेष्ठ गोद होनेसे अथवा आपको प्राप्त होकर फिर जन्म मरणसे रहित होजाते हैं इससे वरारोह १२२ हैं बड़ा ऐश्वर्य और तपोज्ञान होने से आप महातपा १२३ हैं, ॥१३॥:—

सर्वगः सर्वविद्भानुर्विष्वक्सेनो जनार्दनः ।
वेदो वेदविदव्यंगो वेदांगो वेदवित्कविः॥१४॥

अर्थ—सब जगह आपकी गमन शक्ति है इससे सर्वग

(१२४) हैं, सबको जानते हैं इससे आप सर्ववित् (१२५) हैं सूर्यादिमें भी आपका प्रकाश है इससे भानु (१२६) हैं आपके रणोद्योग से दुष्ट भाग जाते हैं इससे आप विश्वक्सेन(१२७)हैं, मनुष्यों का संहार करने से आप जनार्दन (१२८) हैं. वेद आपही का सत्य ज्ञान है इससे आप वेद (१२९)हैं, वेदको जाननेसे आप वेदवित्[१३०]हैं, समस्त ज्ञान युक्त होनेसे अव्यंग (१३१) हैं, वेद आपके अंग हैं, इससे आप वेदांग (१३२) हैं, वेदोंको विचारने से आप वेदवित् (१३३) हैं, कामना पूर्ण करने से आप कवि (१३४)हैं॥१४॥

लोकाध्याक्षः सुराध्यक्षो धर्म्माध्यक्षः कृताकृतः।
चतुरात्मा चतुर्व्यूहश्चतुर्दंष्ट्रश्चतुर्भुजः॥ १५॥

अर्थ—सब लोकों को आप ज्ञानदृष्टि से देखते हैं इससे लोकाध्यक्ष (१३५) हैं, देवताओं के समद्रष्टा होने से आप सुराध्यक्ष [१३६] हैं, अनुरूप फल देने को साक्षात् धर्म अधर्म को देखनेसे आप धर्माध्यक्ष(१३७)हैं, प्रवृत्ति और निवृत्ति मार्गके नियन्ता होनेसे कृताकृत(१३८)हैं, ब्रह्मा त्रिकाल और अखिल जीवसृष्टिके बढ़ानेकी विभूति, विष्णु सब जीव स्थितिके हेतु हैं इससे आप चतुरात्मा (१३९)हैं, संकर्षण, वासुदेव, प्रद्युम्न, अनिरुद्धि ये चार

व्यूह हैं, इससे आप चतुर्व्यूह(१४०)हैं, नृसिंह अवतार में चार डाढें धारण करनेसे चतुर्दंष्ट्र (१४१) हैं, चारों वेद आप के भुजाहैं इससे आप चतुर्भुज(१४२) हैं ॥ १५ ॥

भ्राजिष्णुर्भोजनंभोक्ता सहिष्णुर्जगदादिजः।
अनघोविजयोजेताविश्वयोनिः पुनर्वसुः॥१६॥

अर्थ—प्रकाशमान होने से भ्राजिष्णु (१४३) हैं. माया है भोजन आपकी इससे भोजन (१४४)हैं,जीवरूप धारण करने से आप भोक्ता [१४५] हैं दुष्टों के तिरस्कार को सहने से सहिष्णु (१४६) हैं, जगत् के आदि में आपही हैं इससे जगदादिज (१४७)हैं, पाप रहित होने से अनघ (१४८)हैं. संसार को वश करने से आप विजय [१४९] हैं, स्वाभाविक जिसमें सब जीव लीन होजाते हैं इससे आप जेता [१५०]हैं, विश्वके आदिकारण होनें सें विश्व योनि [१५१] हैं, चैत्ररूप से वारम्बार शरीर में निवास करने सें पुनर्वसु [१५२] हैं १६॥

उपेन्द्रो वामनः प्रांशुरमोघः शुचिरूर्जितः।
अतीन्द्रः संग्रहः सर्गोधृतात्मानियमोयमः॥१७॥

अर्थ—इन्द्रके छोटे भाई और ऊपर होनें से आप उपेन्द्र १५३ हैं, वामन रूप सें बलि की याचनाकी इससे आप वामन १५४ हैं वामन रूप से त्रिलोकी को नापा इससें

प्रांशु १५५हैं अक्षयफल के देने से आप अमोघ १५६ हैं, पूजक और उपासकों को शुद्धि करने से आप शुचि १५७ हैं, पूर्ण बल होनेसे आप ऊर्जित १५८ हैं,ज्ञानैश्चर्यादि गुणों में इन्द्र से आप परे हैं इससे आप अतीन्द्र १५९ हैं, प्रलय काल में सबको समेट लेते हैं, इससे आप संग्रह १६० हैं, सृष्टिको रचनेसे आप सर्ग १६१ हैं, जन्मादिरहित एकरस आत्मा होने से आप धृतात्मा १६२ हैं, सूर्यचन्द्रादि चराचर अपने धर्म पर लगाने से आप नियम १६३ हैं, पापियों को दण्ड देने से आप यम १६४ हैं ॥ १७॥

वेद्यो वैद्यः सदायोगी वीरहा माधवो मधुः ।
अतीन्द्रियो महामायो महोत्साहोमहाबलः॥१८

अर्थ—सबके शुभाशुभ को जानने से आप वेद्य १६५ हैं सब विद्याओं को जानने से आप वैद्य १६६ हैं, सब काल में प्रकट होने से सदायोगी १६७ हैं, दुष्टों के वध करने से वीरहा १६८ हैं, माया और लक्ष्मी के पति होने से आप माधव १६९ हैं, परा प्रीति को पैदा कराने से आप मधु (१७०) हैं, पञ्च ज्ञानेन्द्रियों से आप दूर हैं इससे अतीन्द्रिय (१७१ हैं, मायारहित भी बहुत माया करते हो इससे महामाय (१७२) हैं

जगत् की उत्पत्ति स्थिति और प्रलय में बहुत उत्साह होने से आप महोत्साह (१७३) हैं, अति पराक्रमी होने से आप महाबल (१७४) हैं, ॥ १८ ॥:—

महाबुद्धिर्महावीर्यो महाशक्तिर्महाद्युतिः ।
अनिर्देश्यवपुः श्रीमानमेयात्मा महाद्रिधृक् १९

अर्थ—बहुत बुद्धिमान होने से आप महाबुद्धि (१७५) हैं, संसार में उत्पन्न करने की शक्ति होने से आप महावीर्य (१७६) हैं, अति सामर्थ्यवान होने से महाशक्ति (१७७) हैं भीतर बाहर अति प्रकाश होने से आप महाद्युति (१७८)हैं, अप्रमाण शरीर होने से आप अनिर्देश्यवपु (१७९) हैं, ऐश्वर्यवान होने से आप श्रीमान (१८०) हैं, जीव आपकी बुद्धि और आत्मा को नहीं जान सक्ते इससे आप अमेयात्मा (१८१) हैं, अमृत के हेतु मन्द्राचल के उठाने से अथवा गो गोपाल की रक्षाके निमित्त गोवर्धन उठानेसे आपमहाद्रिधृक् (१८२) हैं ॥१९

महेष्वासो महीभर्ता श्रीनिवासः सतांगतिः ।
अनिरुद्धः सुरानन्दो गोविन्दो गोविदांपतिः

अर्थ—बड़े धनुर्धर होने से आप महेष्वास (१८३) हैं. पृथ्वी के पति होने से महीभर्ता (१८४ हैं, वक्षस्थल में लक्ष्मी का निवास होने से श्रीनिवास (१८६)

हैं, वेदानुयायियों की गति हैं इससे आप सतांगति (१८६) हैं, आप की गति को कोई नहीं रोक सक्ता इससे आप अनिरुद्ध (१८७) हैं, देवतान को आनन्द देने वाले हैं इससे आप सुरानन्द (१८८) हैं, पृथ्वी, गौ, वेदवाणी के रक्षक होने से आप गोविंद (१८९) हैं, वेदार्थ ज्ञाता ऋषियों के स्वामी होने से आप गोविन्दां पति (१९०) हैं, ॥ २० ॥:—

मरीचिर्दमनो हंसः सुपर्णो भुजगोत्तमः ।
हिरण्यनाभः सुतपाः पद्मनाभः प्रजापतिः २१

अर्थ—बहुत तेजस्वी होने से आप मरीच (१९१) हैं, गर्व को दमन करने से आप दमन (१९२) हैं, सब शरीर में व्याप्त होने से आप हंस (१९३) हैं पक्षियों में गरुड़ आपको विभूति है, इसस आप सुपर्ण (१९४) हैं, शेष रूप होने से आप भुजगोत्तम (१९५) हैं, प्रकाश आपकी नाभिमें है इससे आप हिरण्य नाभ (१९६) हैं. नर नारायण रूप धारण करके सुन्दर तप करने से सुतपा (१९७) हैं, नाभि में कमल होने से पद्मनाभ १९८ हैं. ब्रह्मा रूप से प्रजा को उत्पन्न करने से प्रजापति (१९९) हैं, ॥ २१ ॥

अमृत्युः सर्वदृक्सिंहः संधाता संधिमान् स्थिरः ।
अजोदुर्मर्षणः शास्ता विश्रुतात्मा सुरारिहा २२

अर्थ—विनाश न होने से अमृत्यु (२००) हैं, स्वाभाविक प्राणियों के कर्मों को देखने से सर्वदृक् [२०१] हैं, पापों को नाश करने से आप सिंह (२०२) हैं, प्रलय काल में सबको इकट्ठा कर लेने से आप संधाता (२०३) है. फल के भोक्ता होने से संधिमान् (२०४) हैं, सदा एक रस होने से स्थिर [२०५] हैं, कभी जन्म नहीं लेते इससे अज (२०६) हैं, दैत्यादिक आप पर क्रोध नहीं कर सक्ते इससे दुर्मर्षण (२०७) हैं श्रेष्ठ शिक्षा देने से आप शास्ता [२०८] हैं, सत्यज्ञानादि लक्षण होनेसे आप विश्रुतात्मा [२०९] हैं राक्षसोंकोनाशकरने सेआपसुरारिहा [२१०] हैं ॥२२॥

गुरुर्गुरुतमो धाम सत्यः सत्यपराक्रमः ।
निमिषोऽनिमिषःस्रग्वी वाचस्पतिरुदारधीः २३

अर्थ—सब विद्याओं के उपदेष्टा और सबके पिता होने से आप गुरु [२११] हैं ब्रह्मविद्या के उपदेष्टा होने से गुरुतम [२१२] हैं; सब कामनाओं के आस्पद अथवा प्रकाश रूह होने से आप धाम [२१३] हैं, अविचलनियम होने से आप सत्य [२१४] हैं, अवितथ पराक्रम होने से आप सत्य पराक्रम [२१५] हैं; योगनिद्रामें नेत्र वन्द करने से निमिष (२१६) हैं; नित्य चैतन्य रूपहोने से अनिमिष

२१७हैं, वैजयंती माला के धारण करनेसे स्रग्वी [२१८]हैं वाणी के पति और उदार बुद्धि होने से वाचस्पतिरुदारधी [२१९] हैं, ॥२३॥

अग्रणीर्ग्रामणीः श्रीमान न्यायो नेता समीरणः
सहस्रमूर्धा विश्वात्मा सहस्राक्षः सहस्रपात् २४

अर्थ—मुमुक्षुओं को अचल पद पर पहुंचानेसे अग्रणी [२२०] हैं जीवों के नियन्ता होने से ग्रामणी [२२१]हैं कांतिमान् होने से श्रीमान [२२२] हैं, पाप पुण्य का यथार्थ फल देने से आप न्याय [२२३] हैं, जगत्को अपने अपने कार्य मे लगाने से नेता (२२४) हैं. पवनरूप से प्राणियों को जीवित रखनेसे समीरण [२२५] हैं, असंख्य शिर होने से सहस्र मूर्द्धा [२२६] हैं, विश्व की आत्मा होने से विश्वात्मा [२२७] हैं, असंख्य आंख होने से सहस्राक्ष २१८ हैं, असंख्यपद होनेसे सहस्रपात् २२९ हैं॥

आवर्तनो निवृतात्मा संवृतः संप्रमर्दनः ।
अहः संवर्तको वह्निरनिलो धरणीधरः॥२५॥

अर्थ—संसार को अपनी माया में भुला रक्खाहै इससे आवर्तन २३० हैं. संसारके बन्धनों से आपअलग हैं इससे निवृत्तात्मा२३१ हैं, चारों औरसे जीवोंको मायामें घेर रखने से संवृत २३२ हैं, रुद्ररूप से प्रजा का मर्दन करने

स संप्रमर्दन २३३ हैं, सूर्यरूप से दिन को प्रकट कर काल चक्रसे घुमाते हैं, इससे आप अहःसंवर्तक २३४ हैं, अग्नि रूप होनेसे वह्नि २३५ हैं, श्वासरूप होनेसे अनिल २३६ हैं, पृथ्वी को धारण करनेसे धरणीधर २३७ हैं ॥२५॥

सुप्रसादः प्रसन्नात्मा विश्वधृग्विश्वभुग्विभुः।
सत्कर्ता सत्कृतः साधुर्जह्नुर्नारायणो नरः॥२६॥

अर्थ—अपचारपरभी प्रसन्न होने से आप सुप्रसाद २३८ हैं, सदा प्रसन्न रहने से प्रसन्नात्मा २३९ हैं, संसार को धारण करने से विश्वधृक् २४० हैं, विश्वका पालन करने से आप विश्वभुक् २४१ हैं, ब्रह्मादि अनेक रूप धारण करने से विभु २४२ हैं, सत्पुरुषोंका सत्कार करने से सत्कर्ता २४३ हैं, सत्पुरुषों से पूजे जाते हैं इससे सत्कृत २४४ हैं, परकार्यों को साधन करने से आप साधु २४५ हैं, सबको संहार करने से जह्नु २४६ हैं, पंचतत्वों में निवास करने से नारायण २४७ हैं, सबके नियन्ता होने से अथवा नररूप धारण करने से आप नर २४८ हैं॥२६॥

असंख्येयोऽप्रमेयात्मा विशिष्टः शिष्टकृच्छुचिः।
सिद्धार्थः सिद्धसंकल्पः सिद्धिदः सिद्धिसाधनः॥२७

अर्थ—अनगिनती नाम गुण होने से असंख्येय २४९ हैं, आत्मा का प्रमाण न होने से आप अप्रमेयात्मा २५०

हैं, अधिक गुण सम्पन्न होने से विशिष्ट २५१ हैं, श्रेष्ठों का पालन करते और पवित्र रखते इससे शिष्टकृच्छुचि २५२ हैं; सब कामनओं से परिपूर्ण होने से सिद्धार्थ २५३ हैं; सत्यप्रतिज्ञ होने से आप सिद्धि संकल्प २५४ हैं, सिद्धि कर्म का फल देने से सिद्धिद २५५ हैं; सिद्ध पदार्थों के साधक होनेसे आप सिद्धिसाधन २५६ हैं;२७

वृषाही बृषभो विष्णुर्वृषपर्वा वृषोदरः ।
बर्धनो वर्धमानश्चविविक्तःश्रुतिसागरः ॥२८..

अर्थ—धर्मरूप दिवस का प्रकाश करने से आप वृषाही २५७ हैं; भक्तों पर कामनाओंकी वर्षाकर नेसेआपवृषभ २५८ हैं, चराचर में व्याप्त होने से विष्णु२५९ हैं, आपके पास धर्म से पहुंचाजाय यासें आप वृषपर्वा२६० हैं, धर्म रूप उदर होने से आप वृषोदर २६१ हैं, प्रजा को बढ़ाने से आप वर्धन२६२हैं, आप बढ़ते हैं और चेतनों को बढ़ाते इससे आप वर्धमान २६३ हैं, इस प्रकार बढ़ने बढ़ाने पर भी सबसे अलग हैं, इससे आप विविक्त २६४ हैं, श्रुति आप ही से निकली और आपही में मिलती हैं इससे आप श्रुतिसागर ॥ २६५ ॥हैं:—

सुभुजो दुर्धरो वाग्मी महेन्द्रो बसुदो वसुः ।

नैकरूपो बृहद्रूपः शिपिविष्टःप्रकाशनः ॥२९॥

अर्थ—जगत की रक्षा करने वाली आपकी सुन्दर भुजा हैं इससे आप सुभुज २६६ हैं. ध्यान में कठिनाई से आने पर आप दुर्द्धर २६७ हैं, ब्रह्मवाणी आपके मुखसें निकली इससे आप वाग्मी २६८ हैं, इन्द्रों के इन्द्र होने से आप महेन्द्र २६९ हैं, धनके दाता होने से वसुद २७० हैं. माया से स्वरूप को छिपाने से अथवा निर्मल हृदय में वास करने से आप वसु २७१ अनेक रूप होने से आप नैकरूप २७२ हैं, वाराहादि बड़े बड़े रूप धारण करने से आप बृहद्रूप २७३ हैं, सब जीवों में यज्ञरूप परमात्मायज्ञ के हेतु रहते हैं इससे शिपिविष्ट २७४ हैं, सबको प्रकाश करते है इससे प्रकाशन २७५ हैं ॥ २९ ॥

ओजस्तेजा द्युतिधर प्रकाशात्मा प्रतापनः।
ऋद्धः स्पष्टाक्षरो मंत्रश्चन्द्रांशुभास्करद्युतिः ३०

अर्थ—प्राण बल शौर्यादि गुण और कांति को धारण करने से ओजस्तेजोद्युतिधर २७६ हैं, प्रकाश रूप आत्मा होनेसे प्रकाशात्मा २७७ हैं. सूर्य रूप से विश्वको तपाने सेआप प्रतापन २७८ हैं,धर्म ज्ञान वैराग्य करके युक्त होनेसे ऋद्ध२७९हैं,स्पष्ट, उदात्त, ओंकाररूप होने से स्पष्टाक्षर २८०हैं;ऋक्, यजुःसामलक्षण मन्त्र रूप होने से आप

मंत्र २८१ हैं, तापत्रय से भस्मीभूत प्राणियों को चन्द्र किरणवत् शीतल करने से आप चन्द्रांशु २८२ हैं सूर्यवत प्रकाशित होने से आप भास्करद्युती २८३ हैं॥३०॥:—

अमृतांशूद्भवो भानुः शशिविन्दुः सुरेश्वरः।
औषधं जगतः सेतुः सत्यधर्मपराक्रमः॥३१॥

अर्थ—समुद्र मथन में चंद्रमा आप से प्रकट हुआ इससे आप अमृतांशूद्भव २८४ हैं; सूर्यवत् सबमें विद्यमान होने से आप भानु २८५ हैं चंद्रवत् औषधियों को रस पहुंचाने से आप शशिविन्दु २८६ हैं, देवताओं के ईश्वर होने से सुरेश्वर २८७ हैं, संसार रूपी रोग की औषध होने से आप औषध २८८ हैं, संसार रूपी समुद्र को तरने के हेतु आप सेतु हैं इससे जगतः सेतु २८९ हैं, धर्म ज्ञानादि गुण और पराक्रम सत्य होने से आप सत्यधर्मपराक्रम ॥२९० हैं ॥३१॥:-

भूतभव्यभवन्नाथः पवनः पावनोऽनलः।
कामहा कामकृत्कान्तःकामःकामप्रदःप्रभुः॥३२

अर्थ—भूत, भविष्यत, वर्तमान तीनों कालों के स्वामी होने से भूतभव्यभवन्नाथ २९१ हैं पवन रूप होने से आप पवन २९२ हैं पवित्र करने वाले होने से आप

पावन (२६३) हैं, कभी तृप्ति न होने से अनल(२६४) हैं, मुमुक्षु और भक्तों के काम को नाश करने से आप कामहा [२९५) हैं, कामियों की कामना पूर्ण करने से अथवा प्रद्युम्न के पिता होने से आप कामकृत[२६६) हैं, अभि रूप तम होने से कांत (२९७) हैं, इच्छाओं के पूर्ण करने से काम [२९८) हैं, भक्तों की कामना पूर्ण करने से कामप्रद (२९६) हैं, सामर्थ्यवान होने से प्रभु [३००] हैं, ॥३२॥

युगादिकृद्युगावर्तो नैकमायो महाशनः ।
अदृश्योऽव्यक्तरूपश्च सहस्रजिदनन्तजित्॥३३॥

अर्थ—कालभेद करके युगों के करने से युगादिकृत् (३०१) हैं, युगों के वारम्वार करने से युगावर्त [३०२) हैं, अनेक मायारूप होने से नैकमाया [३०३] हैं, प्रलयमें सबकोसमेटकर अपनेमें मिलानेसे महाशन(३०४) हैं, बुद्धि आदि इन्द्रियों से नहीं जाने जाते इससे अदृश्य (३०५) हैं, अप्रकट रूप होने से अव्यक्तरूप (३०६) हैं सहस्रों को जीतने से सहस्रजित् (३०७) हैं, क्रीड़ा करके अनन्त विश्व को जीतने से अनन्तजित् (३०८) हैं, ॥ ३३ ॥

इष्टो विशिष्टः शिष्टेष्टः शिखंडी नहुषो वृषः ।

क्रोधहा क्रोधकृत्कर्ता विश्वबाहुर्महीधरः ॥३४॥

अर्थ—यज्ञ में पूजा होने से आप इष्ट (३०९) हैं, श्रेष्ठ होने से आप विशिष्ट (३१०) हैं, श्रेष्ट विद्वानों के इष्ट होने से शिष्टेष्ट (३११) हैं, मोरपक्षधारी गोप वेष होने से आपशिखंडी (३१२) हैं, अपनी माया करके बांधने से नहुष (३१३) हैं, धर्म रूप होने से वृष (३१४) हैं, क्रोध को नाश करने से क्रोधहा (३१५) हैं, दुष्टों पर क्रोध करने से क्रोधकृत (३१६) हैं, जगत् के रचने से कर्ता (३१७) हैं, सब विश्वमें बाहुहोनेसे आपविश्व-बाहु (३१८) हैं, पूजा अथवा पृथ्वी को ग्रहण करने से महीधर (३१९) हैं, ॥ ३४ ॥

अच्युतः प्रथितः प्राणः प्राणदो वासवानुजः ।
अपान्निधिरधिष्ठानमप्रमत्तः प्रतिष्ठितः ॥३५॥

अर्थ—विकार रहित होने से अच्युत (३२०) हैं, जगत के उत्पत्यादि कर्म से विख्यात होने से प्रथित (३२१) हैं, जीवन के वायु रूपी प्राण होने से आप प्राण (३२२) हैं, असुरों के प्राण लेते हैं, इससे प्राणद (३२३) हैं, इन्द्र के छोटे भ्राता होने से वासवानुज (३२४) हैं, आप कहते हो "सरसामस्मिसागरः" नदियों में सागर हूं सो आप अपानिधि (३२५) हैं, गीता में आप ने कहा है

"मत्स्थानि सर्वभूतानि" सब प्राणी आप में निवास करते हैं इससे आप अधिष्ठान (३२६) हैं, सबको कर्मानुसार फल देनें से अप्रमत्त (३२७) हैं, अपनीमहिमामें प्रतिष्ठित होने से आप प्रतिष्ठित (३२८) हैं ॥ ३५ ॥

स्कन्दः स्कन्दधरो धुर्यो वरदो वायुवाहनः ।
वासुदेवो बृहद्भानुरादिदेवः पुरंदरः ॥ ३६ ॥

अर्थ—अमृत रूप करके वर्षाने से और वायु रूप करके सोखने से आप स्कन्द [३२९] हैं, धर्म को धारण करने से स्कन्दधर [३३०] हैं, सब जीवों के अग्रगण्य होने से आप धुर्य [३३१] हैं, मनवांछित फल देने से आप वरद (३३२) हैं, वायु को चलाने से आप वायु वाहन (३३३) हैं, सब प्राणियों के वासस्थान होने अथवा वसुदेव के पुत्र होने से आप वासुदेव [३३४] हैं, चन्द्र सूर्यादि रूप से आप जगत् को प्रकाशित करते हैं इससे बृहद्भानु (३३५) हैं, सब के आदि कारण होने से आदिदेव (३३६) हैं, देवताओं के शत्रु पुरु के मारने से आप पुरंदर (३३७) हैं. ॥ ३६ ॥

अशोकस्तारणस्तारः शूरः शौरिर्जनेश्वरः ।
अनुकूलः शतावर्तः पद्मी पद्मनिभेक्षणः ॥३७॥

अर्थ—शोक रहित होनें से अशोक [३३८] हैं,

संसार सागर से तारते हैं, अतएव तारण (३३९) हैं, गर्भ, जन्म, जरा; मृत्यु के भय से छुड़ाते हैं इससे तार (३४०) हैं, पराक्रमी होने से शूर (३४१) हैं; शूरसेन के कुल में होने से शौरि ३४२ हैं, जीवजन्तुओं के ईश्वर होने से जनेश्वर (३४३) हैं, आप्तत्व करके सब के अनुकूल होने से अनुकूल (३४४) हैं, धर्म की रक्षा के निमित्त अनेक जन्म लेने से शतावर्त (३४५) हैं, कमल हाथ में होने से पद्मी (३४६) हैं, कमल के से नेत्र होने से पद्मनिक्षण [३४७] हैं, ॥३७॥

पद्मनाभोऽरविंदाक्षः पद्मगर्भः शरीरभृत् ।
महर्द्धिऋद्धो वृद्धात्मा महाक्षो गरुणध्वजः ॥

अर्थ—पद्म नाभी में स्थित होने से पद्मनाभ (३४८) हैं, कमल से नेत्र हैं इससे अरविंदाक्ष [३४९] हैं, हृदय रूपी कमल में योगियों के उपास्य होने से पद्मगर्भ [३५०] हैं, अन्नादिक से प्राणियों का पोषण करने से अथवा स्वयं शरीर धारण करने से शरीरभृत् (३५१) हैं. बहुत ऐश्वर्यवान् होने से महर्द्धि ३५२ हैं. प्रपंच से बढे इससे ऋद्ध ३५३ हैं, पुरातन आत्मा होने से वृद्धात्मा ३५४ हैं, विशाल नेत्र होने से महाक्ष ३५५ हैं, ध्वजामें गरुणका चिन्ह होनेसे गरुड़ध्वज ३५६ हैं, ॥३८॥

अतुलः शरभो भीमः समयज्ञो हविर्हरिः ।
सर्वलक्षणलक्षण्यो लक्ष्मीवान् समितिंजयः ३९

अर्थ—"न तस्य प्रतिमाअस्ति" इत्यादि किसीकेसमान नहीं इससे अतुल [३५७ है, जीर्ण शरीरों में अलग २ रूप से प्रकाशमान होने से शरभ [३५८] हैं, चराचर आप से डरते हैं इससेभीम (३५९) हैं, उत्पत्ति, स्थिति प्रलय काल को जानने से आप समयज्ञ [३६०] हैं, यज्ञ भागों को लेने से अथवा प्राणियों के पाप हरने से आप हविर्हरि [३६१] हैं. सब प्रमाणों से आप जाने जांय हैं अतएव आप सर्व लक्षणलक्षण्य [३६२] हैं; लक्ष्मी का वक्षःस्थल में निवास होनेसे लक्ष्मीवान् ३६३ हैं, युद्ध को जीतने से समितिंजय (३६४) हैं ॥३९॥

विक्षरो रोहितो मार्गो हेतुर्दामोदरः सहः ।
महीधरो महाभागो वेगवानमिताशनः ॥४०॥

अर्थ—नाशरहित होने से विक्षर (३६५) हैं. मत्स्य-रूप धारण करने से आप रोहित [३६६] हैं, मुमुक्षु आप को ढूंढते हैं, इससे आप मार्ग [३६७] हैं. उपादान निमित्त कारण होने से आप हेतु (३६८) हैं, इन्द्रादिकों को जीतने वाले को उत्तम गति देने से अथवा यशोदा ने रस्सी से बांधे अतएव आप दामोदर (३६९) हैं

सब के अपराधों को सहते हैं इससे सह (३७०) हैं, गिरिरूप से पृथ्वी को धारण करते हैं, इससे महीधर (३७१) हैं, अवतारों में बड़ा ऐश्वर्य प्रकट करने से महाभाग (३७२) हैं, मन से भी अधिक वेग होने से वेगवान [३७३] हैं प्रलय में संसार का भक्षण करने से, अमिताशन (३७४) हैं ॥ ४० ॥

उद्भवः क्षोभणो देवः श्रीगर्भः परमेश्वरः ।
करणं कारणं कर्ता विकर्ता गहनो गुहः ॥४१॥

अर्थ—संसार से आप अलग और उत्पत्ति पालन नाश करने से आप उद्भव (३७५) हैं; प्रकृति और पुरुष को क्षोभ कराने से आप क्षोभण (३७६) हैं "एकोदेव" श्रुति के अनुसार आप ही चलते फिर क्रीड़ा करते हैं इससे देव (३७७) हैं जगद्गर्भा बिभूति आपके उदर में है इससे आप श्रीगर्भ (३७८) हैं; परम ऐश्वर्यवान् होने से आप परमेश्वर (३७९) हैं, संसार के साधक मत होने से करण (३८०) ,हैं जगत् की उत्पत्ति में उपादान होने से आप कारण (३८१) हैं, जगत के स्वतंत्र रचने वाले हैं इससे कर्ता (३८२ हैं, विचित्र भुवनन के करने से आप विकर्ता (३८३)हैं; आपके स्वरूप; सामर्थ्य और चेष्टा नहीं जाने जांय इससेगहन३८३ हैं, माया करके अपना स्वरूप छिपाया है इससे गुह ३८५ हैं ॥ ४१ ॥:—

व्यवसायो व्यवस्थानः संस्थानः स्थानदोध्रुवः ।
परर्द्धिः परमस्पष्टस्तुष्टः पुष्टः शुभेक्षणः ॥४२॥

अर्थ—सच्चितरूप होने से व्यवसाय ३८६ हैं, आप में सब की व्यवस्थिति है इससे व्यवस्थान ३८७ हैं, प्राणियों का प्रलय में आप में स्थान है इससे आप संस्थान ३८८ हैं, कर्मानुसार सबको स्थान देने से स्थानद ३८९ हैं; अविनाशी होनेसे ध्रुव ३९० हैं; सबसे परे ऋषि हैं इससे परर्द्धि ३९१ हैं; अनन्य सिद्धि होने से परमस्पष्ट ३९२ हैं, परमानदरूप होने से तुष्ट ३९३ हैं; गुणों से भरपूर हैं इससे पुष्ट ३९४ हैं, मनवांछित फल देने वाले नेत्र होने सेशुभेक्षण ३९५ हैं, ॥ ४२ ॥—

रामो विरामो विरजो मार्गो नेयोनयोऽनयः ।
वीरः शक्तिमतां श्रेष्ठो धर्मो धर्मविदुत्तमः॥४३॥

अर्थ—योगिजनों के निवास स्थान होने से राम ३९६ हैं, प्राणियों को आराम देने से विराम ३९७ हैं, रजोगुण रहित होने से विरज ३९८ हैं, "नाऽन्यः पन्था विद्यतेऽयनाय" मुमुक्षुओं के आप ही मार्ग हैं इससे मार्ग ३९९ हैं, सन्मार्ग में प्रेरक होने से नेय ४०० हैं, जीवों को अपना करते हैं इससे नय ४०१ हैं, कोई नेता नहीं इससे अनय ४०२ हैं; पराक्रमी होने से वीर ४०३ हैं, ब्रह्मादिकों से

भी उत्तम शक्ति होने से शक्तिमतां श्रेष्ठ ४०४ हैं, धर्म करके आराधन के योग्य होने से धर्म ४०५ हैं. धार्मिकों में उत्तम होने सों धर्मविदुत्तम ४०६ हैं ॥ ४३ ॥:—

वैकुण्ठः पुरुषः प्राणः प्राणदः प्रणवः पृथुः।
हिरण्यगर्भः शत्रुघ्नो व्याप्तोवायुरधोक्षजः॥४४॥

अर्थ—विविध प्रकार की कुंठित गतियों को नाश करने से आप वैकुंठ ४०७ हैं. सबसे पहले हुए अथवा पुर में शयन करनेंसेपुरुष ४०८ हैं. क्षेत्रज्ञरूप से सब के प्राण होनेसे प्राण ४०९ हैं प्रलय में प्राणियों का नाश करने से प्राणद ४१० हैं, सब आपको प्रणाम करते हैं इससे प्रणव हैं ४११ हैं, संसार रूप से विस्तार को प्राप्त हुए इससे पृथु ४१२ हैं ब्रह्मा आपके गर्भ से हुआ इससे हिरण्यगर्भ ४१३ हैं देवताओं के शत्रुओं को मारनें से शत्रुघ्न ४१४ हैं, सब कार्यों में व्याप्त होने से व्याप्त ४१५ हैं "पुण्यो गंध- पृथिव्यांच" यह आपने कहा है इस वास्ते वायु रूप होने से वायु ४१६ हैं, आपके आश्रय से अधोगति नहीं होती उससे आप अधोक्षज ४१७ हैं ॥ ४४ ॥—

ऋतुः सुदर्शनः कालः परमेष्ठी परिग्रहः।
उग्रःसम्वत्सरोदक्षो विश्रामो विश्वदाक्षिणः॥४५॥

अर्थ—यथा काल पर ऋतु पैदा करने से ऋतु [४१८] हैं, भक्तन को आपका दर्शन निर्वाण फल देता है इससे सुदर्शन [४१९] हैं, समयरूप से सबको गिनते हो इससे काल (४२०)हैं, हृदयाकाश रूप अपनी महिमा में विराजते हैं, इससे परमेष्ठी४२१हैं भक्तों से अर्पित पत्र पुष्प को ग्रहण करने सेआप परिग्रह ४२२ हैं, सूर्यादिकों को भय देनेसे आप उग्र ४२३ हैं, प्राणी सुखपूर्वक आपमें निवास करतेहैं इस सो संवत्सर ४२४ हैं जगत के रचने में कुशल होनेसे आपदक्ष (४२५) हैं संसार समुद्र में नानाप्रकार के क्लेशों से प्राणियों को विश्राम देने से आप विश्राम (४२६) हैं, विश्व के रचने में बड़े चतुर ह इससे विश्वदक्षिण (४२७) हैं, ॥ ४५ ॥

विस्तारः स्थावरः स्थाणुः प्रमाणं बीजमव्ययम्।
अर्थोऽनर्थो महाकोशो महाभोगो महाधनः॥४६

अर्थ—समस्त जगत का विस्तार करने से विस्तार (४२८) हैं, स्थितिशील पृथिव्यादि आपमें निवास करते हैं इस से स्थावर (४२९) हैं त्रिकाल में एक रस होने से स्थाणु (४३०) हैं, सब वस्तुओं के प्रमाण होने से आप प्रमाण (४३१) हैं, विनाशरहित सब चराचर के बीज रूप होने से आप बीजमव्यय (४३२) हैं, सुख

रूप होने से आप से मिलने की सब प्रार्थना करते हैं इस से आप अर्थ (४३३) हैं किसी से कुछ कामना नहीं रखते इससे आप अनर्थ (४३४) हैं, अन्नादिक के कोष होने से आप महाकोश (४३५) हैं सुख रूप, भोगों के भोगने वाले हैं इससे महाभोग (४३६) हैं, भोगसाधन रूप बड़ा धन होने से महाधन (४३७) हैं,

अनिर्विण्णः स्थविष्ठो भूर्धर्म्मयूपो महामखः ।
नक्षत्रनेमिर्नक्षत्री क्षेमः क्षामः समीहनः ॥४७॥

अर्थ—सब कामनाओं से परिपूर्ण हैं. किसी वस्तु की अपेक्षा नहीं इससे अनिर्विरण्ण [४३८] हैं विराट रूप से स्थित हैं इससे आप स्थविष्ट (४३९) हैं अजन्मा होकर सब पृथ्वी को धारण करते हैं इससे आप भू (४४०) हैं धर्म के आप यज्ञ खंभ हैं इससे आप धर्मयूप[४४१] हैं आपके अर्थ बडे बडे यज्ञ किये जांय इससे आप महामख (४४२) हैं, सब तारागणों की नेमि रूप होने से नक्षत्रनेमि (४४३) हैं, नक्षत्रों के स्वामी चन्द्रमा रूप होने से आप नक्षत्री [४४४] हैं पृथ्वी के समान सबको सहने से क्षम (४४५) हैं आत्मा रूप से सब प्राणियों में स्थित हैं इससे आप क्षाम (३४६) हैं, सृष्टि रचने के हेतु चेष्टा कराने से समीहन [४४७] हैं ॥४७॥

यज्ञ इज्यो महेज्यश्च क्रतुः सत्रं सतां गतिः ।
सर्वदर्शी विमुक्तात्मा सर्वज्ञो ज्ञानमुत्तमम्॥४८

अर्थ—"यज्ञो वै विष्णु" श्रुति कहती है आप यज्ञरूप हैं इससे यज्ञ [४४८] हैं आप यजन के योग्य हैं इससे इज्य [४४९] हैं सब देवतान में अधिकतर यज्ञ के योग्य होने से आप महेज्य [४५०) हैं; यूप सहित यज्ञ रूप होने से क्रतु ४५१ हैं, यज्ञों की रक्षा करने से आपसत्र ४५२ हैं, महात्माओं की आपही गति हैं इससे सतांगति ४५३ हैं सबको आप देखते हैं इससे सर्वदर्शी ४५४ हैं स्वभाव करके मुक्त होने से आप विमुक्तात्मा ४५५ हैं सब को जानने से सर्वज्ञ ४५६ हैं सब उत्कृष्ट पदार्थों का का साधक तम ज्ञान होने से आप ज्ञानमुत्तम ४५७ हैं, ४८

सुव्रतः सुमुखः सूक्ष्मः सुघोषः सुखद सुहृत् ।
मनोहरो जितक्रोधो वीरबाहुर्विदारणः ॥४९॥

अर्थ—अभय देने का सुन्दर नियम होने से आप सुव्रत ४५८ हैं, प्रसन्न सन्मुख अथवा सब विद्याओं के उपदेश करने से आप सुमुख ४५९ हैं आप लघुरूप से सबमें प्रवेश करते हैं इससे सूक्ष्म ४६० हैं, वेदरूपी वाणी आप के मुख से निकली इससे सुघोष ४६१ हैं भलों को सुख देते और दुष्टों के सुख को दूर करते इससे सुखद ४६२ हैं

सबसे श्रेष्ठ भाव से वर्तें इससे सुहृत् ४६३ हैं आपके गुण मनको हरते हैं इससे मनोहर ४६४ हैं क्रोध को जीत रक्खा इससे आप जितक्रोध ४६५ हैं; बड़ी पराक्रम वाली भुजा होने से आप वीरबाहु ४६६ हैं, अधर्मियों का नाश करने से आप विदारण ४६७ हैं ॥४२

स्वापनः स्ववशो व्यापी नैकात्मा नैककर्मकृत् ।
वत्सरो वत्सलो वत्सी रत्नगर्भो धनेश्वरः ॥५०॥

अर्थ—प्राणियों को आप प्रलय काल में गहरी नींद देते हैं इससे आप स्वापन (४६८) हैं स्वतन्त्र होने से आप स्ववश (४६९] हैं आकाशवत् सब जगह व्यापक होने से आप व्यापी ४७० हैं, अनेक प्राणियों में अनेक रूप होने से आप नैकात्मा ४७१ हैं जगत् की उत्पत्ति, संपत्ति, विपत्ति, अनेक कर्म करते हैं इससे आप नैकर्मकृत् ४७२ हैं, अखिल आप में निवास करता है इससे वत्सर ४७३ हैं, भक्तों पर स्नेह करने से वत्सल [४७४] हैं; बछड़ों को पालने से अथवा वत्सरूप प्रजा होने से वत्सी ४७५ वात्सल्यादि गुण रूप आप के गर्भ में है इससे रत्नगर्भ [४७६] हैं, धनों के स्वामी होने से आप धनेश्वर हैं५०॥

धर्मगुप् धर्मकृद्धर्मी सदसत्क्षरमक्षरम् ।
अविज्ञाता सहस्रांशुर्विधाता कृतलक्षणः ॥५१॥

अर्थ—धर्म की रक्षा करने से धर्म गुप् ४७८ हैं, धर्म अधर्म रहित भी आप धर्म संस्थापन करते हैं, इससे आप धर्मकृत ४७९ हैं; धर्म के आधार होने से आप धर्मी ४८० हैं, आत्मा और देह रूप सत्य और असत्य हैं इस से आप सदसत् ४८१ हैं, प्राणीमात्र को देहरूपनाशवान हैं. इससे क्षर ४८२ हैं, आत्म रूप अविनाशी होने से अक्षर ४८३ हैं. आपको भेदाभेद का ज्ञान नहीं इससे अविज्ञाता ४८४ हैं. सूर्यवत् तेज रूप होने से सहस्रांशु ४८५ हैं, शेष. दिग्गज, भूवर और समस्त प्राणियों के धारण करने से आप विधाता ४८६ हैं, नित्य निष्पन्न चैतन्य रूप आप होन से कृतलक्षण ४८७ हैं, ॥ ५१ ॥

गभस्तिनेमिः सत्वस्थः सिंहो भूतमहेश्वरः ।
आदिदेवो महादेवो देवेशो देव भृद्गुरुः ॥५२

अर्थ—सुदर्शन चक्र में सूर्य रूप स्थित हैं इससे आप गभस्तिनेमी (४८८) हैं, सत्वगुण का प्रकाश करने से अथवा सब प्राणियों में स्थित होने से आप सत्वस्थ [४८९] हैं, सिंह के समान उत्कर्ष बल होने से सिंह [४९०] हैं, सब प्राणियों के महान ईश्वर होने से भूत-महेश्वर (४९१) हैं, सब के आदिकारण होने से आदि-देव [४९२] हैं, आप से परे कोई देव नहीं है इससे

आप महादेव (४९३) हैं, देवताओं में प्रधान होने से आप देवेश [४९४] हैं, देवतान के भरण पोषण करने से आप देवभृत् (४९५) हैं सब के शिक्षक होने से आप गुरु (४९६) हैं, ॥ ५२ ॥

उत्तरो गोपतिर्गोप्ता ज्ञानगम्यः पुरातनः ।
शरीरभूतभृद्भोक्ता कपीन्द्रो भूरिदक्षिणः॥५३॥

अर्थ—जन्म और संसार सागर से पार करें अथवा सर्वोत्कृष्ट होने से उत्तर ४९७ हैं, गौओं के पालने को आपने गोपवेष धारण किया इससे गोपति ४९८ हैं, प्राणीमात्र की रक्षा करने सेगोप्ता ४९९ हैं, ज्ञान से जाने जांय इससे ज्ञानगम्य ५०० हैं सनातन होने से आप पुरातन ५०१ हैं, पञ्चभूतों से बनें हुए शरीर को पोषण करनें से शरीर भूतभृत ५०२ हैं, परमानन्द के भोगनें से भोक्ता (५०३) हैं; बाराहमूर्ति अथवा बानराधीश रघुनाथजी होने से आप कपीन्द्र (५०४) हैं धर्म की मर्यादा के हेतु आप यज्ञ कराते हैं इससे भूरिदक्षिण (५०५) हैं, ॥ ५३ ॥

सोमपोऽमृतपः सोमः पुरुजित्पुरुसत्तमः ।
विनयोजयःसत्यसन्धोदाशार्हःसात्वतापतिः५४

अर्थ— सब यज्ञन में देवता रूप होकर सोमपान करने

से आप सोमप ५०६ हैं, मोहनीरूप सें असुरों को छल देवतान को अमृत पिवाय आप भी पीते भये इससे आप अमृतप ५०७ हैं, चन्द्रमारूप से सब औषधियों के पुष्टि करने से सोम ५०८ हैं, बहुतों को जीतने से पुरुजित् ५०९ हैं, सर्वोत्कृष्ट विश्वरूप धारण करने सें पुरुषत्तम ५१० हैं, दुष्ट कों दण्ड देने से विनय ५११ हैं, और जीतने से जय ५१२ हैं, स्तुति में आपको "सत्यसंकल्प" अर्थात् सत्यप्रतीज्ञ लिखा है इससे आप सत्यसंध [५१३] हैं, दान के योग्य होने से अथवा दशार्ह के कुलमें उत्पन्न होने सें दाशार्ह (५१४) हैं; यादवों के पति और योग-क्षम के देने से आप सात्वतांपति [५१५] हैं, ॥ ५४ ॥

जीवो विनायिता साक्षी मुकुन्दोऽमितविक्रम। ।
अंभोनिधिरनंतात्मा महोदधिशयोतकः ॥५५

अर्थ—क्षेत्ररूप करके प्राणों को धारण करने से आप जीव [५१६] हैं; नम्रीभूत प्रजान को साक्षात देखने सें विनयता (५१७) हैं, सबके धर्माधर्म के देखने से साक्षि (५१८) हैं, मुक्तिदाता होने से मुकुन्द (५१९) हैं, अ-पार बल के होनें से अमीत विक्रम [५२०] हैं, देवताओं के निवासस्थान होने से अंभोनिधि (५२१) हैं, दिग्देस काल में व्याप्त होने से अनन्तात्मा [५२२] हैं, प्राणियों

को समेट कर क्षीरसागर में शयन करने से महोदधिशय [५२३] हैं, प्राणियों का नाश करने से अंतक [५२४) हैं, ॥ ५५ ॥:—

अजो महार्हः स्वाभाव्यो जितामित्रःप्रमोदनः।
आनन्दोनन्दनोनन्दः सत्यधर्मा त्रिविक्रमः।५६

अर्थ—अजन्मा आपसे जगत की उत्पत्ति है अतएव आप अज (५२५) हैं, बड़ी पूजा के योग्य होने से महार्ह (५२६) हैं, स्वभाव करके नित्य सिद्धरूप होनेसे स्वभाव्य (५२७) हैं, भीतर के रागद्वेषादि और बाहर के रावणादि अमित्र जीत लेनेसे जितामित्र (५२८) हैं, ध्यानियों को आनन्द देनेसे प्रमोदन (५२९) हैं, आपका आनन्द स्वरूप है इससे आनन्द (५३०) हैं, सबको प्रसन्न करनेसे नन्द (५३१) हैं, विषयवासनारूप सुखके न होने से अनन्द (५३२) हैं, धर्म ज्ञानादिक सत्य होने से आप सत्यधर्म (५३३) हैं, वामनरूप धारणकर तीनों लोक नापने से आप त्रिविक्रम (५३४) हैं, ॥ ५६ ॥ :—

महर्षि कपिलाचार्यः कृतज्ञो मेदिनीपतिः ।
त्रिपदास्त्रिदशाध्यक्षो महाश्रंगः कृतान्तकृत्।।५७

अर्थ—चारों वेदों के जानने वाले और सांख्य शास्त्रके तत्ववेत्ता हैं इससे महर्षिकपिलाचार्य (५३५) हैं, थोड़े

धर्मको वहुत मानने से कृतज्ञ (५३६) हैं, पृथ्वी के रक्षक होनेसे मेदिनीपति (५३७) हैं, तीन पैर से त्रिलोकी नापी इससे त्रिपद (५३८) हैं, जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति, अथवा त्रयोदश अवस्था अथवा देवतान के स्वामी होनेसे त्रिदशाध्यक्ष (५३९) हैं, प्रलय में मत्स्यरूप धारण करने से अथवा वाराह रूप धारण कर सींगरूप डाढ पर पृथ्वी के लाने से महाशृंग (५४०) हैं, सृष्टि का संहार करने से अथवा मृत्यु के भी मृत्यु होने से आप कृतांतकृत (५४१) हैं ॥ ५७ ॥:—

महावराहो गोविन्दः सुषेणः कनकांगदी ।
गुह्यो गभीरो गहनो गुप्तश्चक्रगदाधरः ॥५८॥

अर्थ—वड़े वाराह रूप होने से महावराह (५४२) हैं, वेदान्त वाक्य रूप वाणी से जाने जांय सो गोविन्द(५४३) हैं, शुद्धगुणात्मक सेवक हैं आपके इससे सुषेण (५४४) हैं, सुवर्ण के बाजू पहनने से आप कनकांगदी (५४५) हैं, हृदय रूप आकाशमें गुप्त रहने से गुह्य (५४६) हैं. ज्ञान ऐश्वर्य और वालादिकन से गभीर [५४७] हैं, आपके चरित्र में प्रवेश करना कठिन है या से आप गहन (५४८) हैं, मन और वाणी से अगोचर हैं, इससे आप गुप्त[५४९] हैं, प्राणियो की रक्षा के निमित्त मनरूपी चक्र और बुद्धि

रूपी गदा के धारण करने से चक्रगदाधर [५५०] हैं ॥५८॥

वेधाः स्वाङ्गोजितः कृष्णो दृढः संकर्षणोऽच्युतः।
वरुणो वारुणोवृक्षः पुष्कराक्षोमहामनाः ॥५९॥

अर्थ—सृष्टि के धारण करने से वेधा (५५१) हैं, कार्य करने के हेतु आप सहकारी हैं, इससे स्वांग (५५२) हैं, किसी अवतार में किसी ने नहीं जीते इससे अजित (५५३) हैं, कृष्ण द्वैपायन व्यास श्यामवर्ण हैं इससे आप कृष्ण (५५४) हैं, अच्युत स्वरूप होने से दृढ़ (५५५) हैं, संहार समय में सब प्रजा को खींच लेते हैं और आप अच्युत हैं इससे संकर्षणोच्युत (५५६) हैं, सायंकाल को वरुण की दिशा में जाने से सूर्य रूप हैं, इससे वरुण [५५७] हैं, वरुण के पुत्र अगस्त्य वशिष्ठ रूप होत भये इससे वारुण (५५८) हैं, वृक्ष की तरह अचल होने से वृक्ष [५५९] हैं, हृदयरूपी कमल में प्रकाश करने से पुष्कराक्ष (५६०) हैं, मनही से उत्पत्ति पालन, नाश करने से महामना [५६१] हैं, ॥ ५९ ॥

भगवान् भगहा नन्दी वनमाली हलायुधः ।
आदित्योज्योतिरादित्यः सहिष्णुर्गतिसत्तमः।६०

अर्थ—ऐश्वर्य, धर्म यश, लक्ष्मी, वैराग्य, मोक्ष, ये विद्यमान हैं आप में इससे भगवान् (५६२) हैं, संसार

कालमें ऐश्वर्यादिकोंका नाश करनेसे भगहा५६३ हैं. सुख रूप होनेसे नन्दी ५६४ हैं, वैजयंती माला के पहरने से वनमाली ५६५ हैं, वलभद्ररूपसे हल आयुध लिया इससे हलायुध ५६६ हैं, अदितके पुत्र वामनरूप होनेसे आदित्य ५६७ हैं, सूर्य में ज्योतिरूप होने से ज्योतिरादित्य५६८ हैं, शीतोष्ण सुख दुःखादिकों के सहने से सहिष्णु ५६९ हैं, सद्गति देते हैं इससे आप गतिसत्तम ५७० हैं॥६०।

सुधन्वा खंडपरशुर्दारुणोद्रविणप्रदः।
दिवस्पृक् सर्वदृग्व्यासो वाचस्पतिरयोनिजः॥६१

अर्थ—साधुओं का रक्षक, श्रेष्ठ धनुष धारण करते हैं इससे सुधन्वा ५७१ हैं; परशुराम रूप धारण कर जिनका परशा शत्रुओं के काटने से खडित हुआ इससे आप खण्डपरशु ५७२ हैं, सन्मार्ग विरोधियों को आप दारुण हैं इससे दारुण ५७३ हैं. मनवांछित फल के देने से आप द्रविणप्रद ५७४ हैं, स्वर्गरूप होने से तथा स्वर्ग का राज्य करनेसे दिवस्पृक् ५७५ हैं. ऋग्वेद चारों वेदोंका विस्तार करने से सर्वदृग्व्यास ५७६ हैं, माता में जन्म धारण नहीं किया इससे अयोनिज ५७८ हैं,

त्रिसामा सामगः सामानिर्वाणं भेषजं भिषक्।
संन्यासकृच्छमः शांतो निष्ठा शांतिः परायण ६२

अर्थ—वेदत्रयी करके स्तुति के योग्य होने से आप त्रिसामा ५७९ हैं, "वेदानां सामवेदोस्मि" सामवेद से आप गाने के योग्य हैं इससे सामग ५८० हैं, सब दुःखों के दूरकर्ता परमानन्दरूप होने से सामनिर्वाण ५८१ हैं, संसार रोगकी औषध हैं इस कारण आप भेषज ५८२ हैं, संसार रोग से बचाने के हेतु परा विद्या का उपदेश करने हारे आप भिषक् ५८३ हैं, अनेक के हेतु चतुर्थ संन्यासाश्रम निर्म्माण करने से आप संन्यासकृत् ५८४ हैं, प्रधान करके संन्यासियों को शान्ति देनेसे आप शम ५८५ हैं; विषयानन्द में संगति रहित होने से आप शांत ५८६ हैं, प्रलयकाल में सब प्राणियों के आप ही आधार हैं इससे आप निष्ठा ५८७ हैं, सब अविद्याओं से पृथक हैं, शांत स्वभाव हैं, इससे आप शान्ति ५८८ हैं. ब्रह्मही परम उत्कृष्ट स्थान होने से आप परायण ५८९ हैं, ॥ ६२ ॥

शुभांगःशांतिदः स्रष्टा कुमुदः कुवलेशयः ।
गोहितो गोपतिर्गोप्ता वृष भाक्षोवृषप्रियः ॥६३॥

अर्थ—सुन्दर शरीर धारण करने से शुभांग (५९०) हैं, रागद्वेषादि से शांति देते हैं इससे आप शांतिद (५९१) हैं, प्रजा को रचने से स्रष्टा (५९२) हैं, पृथ्वी के विषय आनन्द करने से आप कुमुद (५९३) हैं, शेषपर शयन

करने से आप कुवलेशय (५९४) हैं; गौओं के हेतु गोवर्द्धन उठाया इससे आप गोहित (५९५) हैं, भूमि के पति हैं इस कारण आप गोपति (५९६) हैं; जगत् के रक्षक होने से आप गोप्ता (५९७) हैं, सब कामना के वर्षा करने हारी अथवा धर्म दृष्टि होने से आप वृषभाक्ष (५९८) हैं धर्म ही आप को प्रिय है इससे आप वृषप्रिय (५९९) हैं॥६३॥:—

अनिवर्ती निवृत्तात्मा संक्षेप्ता क्षेमकृच्छिवः।
श्रीवत्सवक्षाः श्रीवासः श्रीपतिः श्रीमतां वरः६५॥

अर्थ—देवासुरसंग्राम और धर्म से आप कभी निवृत नहीं होते इससे अनिवर्ती [६००] हैं, स्वभाव करके ही विषयवासना से निवृत्त इस हेतु निवृत्तात्मा [६०१] हैं, संसारमय जगत् को सकोड़ने से संक्षेप्ता (६०२) हैं उत्पन्न किए हुए की रक्षा करने से क्षेमकृत् (६०३) हैं, स्मरणमात्र से पवित्र करते हैं इससे शिव (६०४) हैं, वक्षस्थल में श्रीवत्स चिह्न धारण करने से श्रीवत्सवक्षा (६०५) हैं, हृदय में अनपायनी लक्ष्मी का निवास होने से श्रीवास (६०६) हैं लक्ष्मी के पति होने से श्रीपति (६०७) हैं श्रीमान् जो ब्रह्मादिक देवता उनमें प्रधान हो इससे आप श्रीमतांवर (६०८) हैं,॥६४॥

श्रीदः श्रीशः श्रीनिवासः श्रीनिधिः श्रीविभावनः।
श्रीधरः श्रीकरः श्रेयः श्रीमांल्लोकत्रयाश्रयः॥६५॥

अर्थ—भक्तोंको श्री देने से श्रीद (६०९ हैं लक्ष्मी-कांत होने से श्रीश (६१०) हैं, श्रीमानों में निवास करने से श्रीनिवास[६११] हैं, लक्ष्मी के निवास स्थान होनेसे श्रीनिधि (६१२)हैं, कर्मानुसार पृथक्२ विभव देने से श्रीविभावन[६१३] ॥ हैं, जगज्जननी लक्ष्मी को धारण करने से आपश्रीधर(६१४)हैं, उपासकों के कल्याण करने से श्रीकर (६१५)हैं, जीवों का कल्याण करने से श्रेय (६१६) हैं, लक्ष्मीवान् होने से आप श्रीमान् [६१७) हैं तीनों लोकों के नाथ होनेसे आप लोकत्रयाश्रय(६१८) हैं, ॥६५॥:–

स्वक्षः स्वंगः शतानन्दो नंदिर्ज्योतिर्गणेश्वरः।
विजितात्माऽविधेयात्मासत्कीर्तिश्छिन्नसंशयः

अर्थ—कमल के समान नेत्र होने से स्वक्ष (६१९)हैं, सुशोभित अंग धारण करने से स्वंग (६२०)हैं, एक ही परमात्मा के उपाधिभेद से सेकडोंरूप भए हैं यासे आप शतानन्द (६२१)हैं; परमानन्द विग्रह होने से नन्दी [६२२]हैं, नक्षत्रादि प्रकाशित पदार्थों के ईश्वर होनेसे ज्योतिगणेशश्वर (६२३)हैं, मनको विजय करने से विजि-

तात्मा [६२४] हैं, आपके आत्मस्वरूप को कोई नहीं जान सके इससे अविधेयात्मा [६२५] हैं, सत्यकीर्ति होने से सत्कीर्ति (६२६) हैं. सबको हस्तामलक करने से और संशय को दूर करनेसे छिन्नसंशय(६२७) हैं,॥६६॥:-

उदीर्णः सर्वतश्चक्षुरनीशः शाश्वतस्थिरः।
भूशयो भूषणो भूतिर्विशोकः शोकनाशनः॥६७

अर्थ—सब प्राणियों से श्रेष्ठ हैं, इससे उदीर्ण(६२८) हैं आपके चारों ओर नेत्र हैं, इससे सर्वतश्चक्षु(६२९) हैं आपका कोई ईश नहीं इससे अनीश [६३०] हैं, निरन्तर विकार रहित होने से शाश्वतस्थिर [६३१]हैं, लङ्काका मार्ग ढूंढते समय समुद्रके किनारे पृथ्वी पर सोये इससे आप भूशय [६३२] हैं पृथ्वी को भूषित करने से भूषण[६३३] हैं,चराचर में आप विभूति हैं इस कारण भूति[६३४] हैं परमानन्दरूप करके शोक रहित होनेसे विशोक[६३५]हैं, भक्तों के शोक का नाश करने से आप शोकनाशन (६३६) हैं,॥६७॥

अर्चिष्मानर्चितः कुंभो विशुद्धात्मा विशोधनः।
अनिरुद्धोऽप्रतिरथःप्रद्युम्नोऽमितविक्रमः॥६८॥

अर्थ—सूर्यचन्द्रमादिक के प्रकाशक होने से अर्चिष्मान् (६३७) हैं, ब्रह्मादिक आप की पूजा करें इससे अर्चित

(६३८)हैं, घट में जैसे सब वस्तु स्थित हैं, ऐसे आपमेंभी लीन हैं इससे कुंभ(६३९)हैं, विशुद्ध आत्मा होने से आप विशुद्धात्मा (६४०)हैं, आप के स्मरणमात्र से पाप नाश होजाते हैं इससे विशोधन (६४१) हैं, शत्रु आपको नहीं रोक सक्ते इससे आप अनिरुद्ध (६४२)हैं, आपका कोई विरोधी नहीं इससे अप्रतिरथ (६४३) हैं, बहुत धन होने से प्रद्युम्न (६४४) हैं, अपरिमित पराक्रम होने से अमितविक्रम (६४५) हैं, ।।६८।।:—

कालनेमिनिहा वीरः शौरिः शूरजनेश्वरः ।
त्रिलोकात्मा त्रिलोकेशःकेशवःकेशिहाहरिः६९

अर्थ—कालनेमि असुर को मारने से कालनेमिनिहा (६४६)हैं, बलवान् होने से वीर (६४७)हैं, शूर कुल में उत्पन्न होने से शौरि [६४८] हैं, शूरवीर जो इन्द्रादिक उनके भी ईश्वर हैं इससे शूरजनेश्वर [६४९] हैं, तीनों लोकों की अंतरात्मा हैं इससे त्रिलोकात्मा [६५०] हैं, तीनों लोकन को अपने कर्मन में प्रवृत्ति करते हैं इससे आप त्रिलोकेश [६५१]हैं. ब्रह्मा और शिव के पिता और सूर्य चंद्रमा की किरण आपके केश हैं, इससे आप केशव [६५२] हैं, केशी दैत्य को मारने से केशिहा [६५३] हैं, संसार को हरते हैं इससे आप हरि [६५४] हैं, ।।६९।।:—

कामदेवःकामपालः कामी कांतःकृतागमः
अनिर्देश्यवपुर्विष्णुर्वीरोऽनन्तो धनंजयः॥७०॥

अर्थ—अर्थ, धर्म, काम मोक्ष.चतुवर्ग के देनेहारे इससे कामदेव(६५५) हैं, कामियोंकी इच्छाओंको पूरण करतेहैं इससे कामपाल (६५६) हैं, कामनान करके परिपूर्ण होने से कामी [६५७] हैं. द्विपरार्द्ध में ब्रह्मा का अन्त करने से कान्त (६५८)हैं, श्रुति स्मृति रूप आगम करने से कृतागम (६५९) हैं गुणन करके अतीत है रूप जिनको इससे अनिर्देश्यवपु (६६०) हैं. व्यापक होने से विष्णु [६६१] हैं, दुखियों के नाश कोदूर करें इससे वीर[६६२] हैं, देश काल वस्तु से अपरिच्छिन्न होने से अनन्त(६६३) हैं, दिग्विजय में अर्जुन रूप से अनंत धनों को जीतने से धनञ्जय (६६४) हैं,॥७० ॥:—

ब्रह्मण्योब्रह्मकृद्ब्रह्मा ब्रह्म ब्रह्मविवर्धनः।
ब्रह्मविद्ब्राह्मणो ब्रह्मी ब्रह्मज्ञो ब्राह्मणप्रियः॥७१॥

अर्थ—तप, वेद, सत्य ज्ञान के हितकारी होने से ब्रह्मण्य (६६५) हैं तपादिके करने से ब्रह्मकृत् (६६६) हैं, ब्रह्मा रूप धारण करके सबको रचते हैं, इससे ब्रह्मा (६६७)हैं, सत्यादि लक्षणों करके वृहत् होने से ब्रह्म (६६८) हैं;तपादिकों के बढाने से आपको ब्रह्मविवर्द्धन

(६६६) कहतेहैं, वेद और वेदार्थ को आप अच्छे प्रकार जाने हैं,इससे ब्रह्मवित् (६७०) हैं, वेद का उपदेश करने से आप ब्राह्मण (६७१] हैं, वेंदादिक आपके रूपहैं इससे ब्रह्मा (६७२) हैं, आत्म भू वेदों को आप जानते हैं इससे ब्रह्मज्ञ [६७३] हैं,वेदवेत्ता आपको प्रिय हैं इससे ब्राह्मण-प्रिय (६७४) हैं, ॥७१॥

महाक्रमो महाकर्मा महातेजा महोरगः।
महाक्रतुर्महायज्वा महायज्ञो महाहविः॥७२॥

अर्थ—वामनरूप में आपने बड़ी २ डगभरीं इससे महाक्रम (६७५) हैं, सृष्टिके रचने के समान आपके बड़े बड़े कर्म हैं, इससे आप महाकर्मा (६७६) हैं, सूर्यादिक आपके तेज हैं, इससे आप महातेजा (६७७) हैं, शेषरूप से पृथ्वीको धारण किया इस कारण महोरग (६७८) हैं, बड़े २ यज्ञरूप होनेसे महाक्रतु (६७९) हैं, अश्वमेध यज्ञ कराने वाले आपही हैं इस कारण महायज्वा (६८०) हैं, यज्ञरूप होनेसे महायज्ञ (६८१) हैं; प्रलयमें सबको अपने में लीन कर लेते हैं इससे आप महाहवि (६८२)हैं,

स्तव्यः स्तव्यप्रियःस्तोत्रंस्तुतिःस्तोता रणप्रियः
पूर्णः पूरयिता पुण्यः पुण्यकीर्तिरनामयः॥७३॥

अर्थ—आप स्तुति के योग्य हैं इससे स्तव्य (६८३) हैं, स्तुति आपको प्यारी है इस कारण स्तवप्रिय(६८४) हैं, जिस स्तुतिसे स्तुति के योग्य हो वहभी आपही हो इस कारण स्तोत्र (६८५) हैं, स्तुतिरूप आपही हो इससे स्तुति(६८६)हैं, करने वाले भी आपही हैं इसकारण स्तोता (६८७)हैं, पंच आयुधों से प्राणियों को बचाते हैं इससे रणप्रिय (६८८) हैं, सब काम और शक्तियों करके परिपूर्ण होनेसे आप पूर्ण (६८९) हैं; केवल पूर्ण ही नहीं किन्तु पूर्ण करने वालेभी हो इससे पूरयिता(६९०) हैं,स्मरणही से पापोंका नाश करने से आप पुण्य(६९१) हैं आपकी कीर्ति मनुष्यों को पवित्र करने वाली है अत-एव पुण्यकीर्ति (६९२)हैं, बाह्य और भीतर की शक्ति से रहित हो इस कारण अनामय (६९३)हैं,॥७३॥

मनोजवस्तीर्थकरो वसुरेता वसुप्रदः ।
वसुप्रदो वासुदेवो वसुर्वसुमना हविः॥७४॥

अर्थ—मनके सदृश वेगवान् होनेसे मनोजव (६९४) हैं, वेदादि विद्या तीर्थरूप बनाने से तीर्थकर (६९५)हैं. सुवर्ण आपका वीर्य्य है,इससे वसुरेता [६९६] हैं, धन को देने वाले हैं, इससे वसुप्रद (६९७) हैं. भक्तों को मोक्ष देते हैं, इस कारण वसुप्रद (६९८) हैं, वसुदेवके

पुत्र होनेसे वासुदेव (६९९) हैं, चराचर में आप वर्तमान हैं, अथवा चराचर आपमें हैं; इस कारण वसु(७००) हैं, सबमें आपका मन बसता है इस कारण वसुमना (७०१) हैं, यज्ञ में हविरूप हैं, इस कारण हवि (७०२) हैं, ॥ ७४ ॥

सद्गतिः सत्कृतिः सत्ता सद्भूतिःसत्यपरायणः।
शूरसेनो यदुश्रेष्ठः सन्निवासः सुयामुनः॥७५॥

अर्थ—महात्माओं को मोक्ष देने से सद्गति [७०३] हैं, जगत् की रक्षा करनेसे सत्कृति [७०४] हैं. भेद शून्य होने से सत्ता (७०५) हैं, साधून के ऐश्वर्य और जग में प्रकाश रूप होनेसे सद्भूति (७०६) हैं, उत्कृष्ट अयन होने से सत्यपरायण (७०७) हैं, हनुमान आदि शूरवीर आपकी सेनामें थे इस कारण शूरसेन (७०८) हैं, यदुवंशियों में श्रेष्ठ होने से यदुश्रेष्ठ [७०९) हैं, विद्वानों के आश्रय हैं. इससे सन्निवास (७१०) हैं, यमुना के तीर पर विहार करने से सुयामुन (७११) हैं, ॥ ७५ ॥

भूतावासो वासुदेवः सर्वासुनिलयोनलः।
दर्पहा दर्पदो दृप्तो दुर्धरोऽथापराजितः॥७६॥

अर्थ—सब प्राणी आप में निवास करते हैं. इसे से आप भूतवास (७१२) हैं, सब जगत् कों आपने अपनी

मायासे ढक रक्खा है, इससे वासुदेव (७१३) हैं, आप में सब जीवात्माओं के प्राण रहते हैं,इससे और आपकी शक्ति और सम्पत् असंख्य है, इस कारण सर्वासुनिलयो नल [७१४] हैं अभिमानियों के दर्प को दूर करनेसे दर्पहा[७१५]हैं,अधर्मियोंके दर्पको नाश करने से दर्पह (७१६) हैं, स्वात्मामृत रस को आस्वादन करने से दृप्त (७१७) हैं, कठिनतासे हृदय में ध्यान किए जांय इससे दुर्धर (७१=) हैं, कोई शत्रु आप को पराजित नहीं कर सकता इससे आप अपराजित [७१९] हैं ॥ ७६ ॥

विश्वमूर्तिर्महामूर्तिर्दीप्तमूर्तिरमूर्तिमान् ।
अनेकमूर्तिरव्यक्तः शतमूर्तिः शताननः॥७७॥

अर्थ—सर्वात्मक होनेसे विश्व आपकी मूर्ति है, इससे विश्वमूर्ति [७२०]हैं, शेषपर्यंकशायी आपकी विशाल मूर्ति है, इससे महामूर्ति (७२१) हैं, ज्ञानमयी तेजोमय मूर्ति होने से दीप्तमूर्ति [७२२] हैं. किसी प्रकार की मूर्ति न रखने से अमूर्तिमान् [७२३] हैं, लोकोपकार के हेतु अनेक मूर्ति धारण करने से अनेकमूर्ति [७२४] हैं, आपके अनेक रूप हैं; और फिर अदृष्ट भी हैं इस कारण अव्यक्त [७२५] हैं, सैकड़ों मूर्ति रखने से शत-

मूर्ति[७२६] हैं. जो आप विश्वादि मूर्ति हैं, इससे शतानन [७२७] हैं. ॥ ७७ ॥

एका नैक सवः कः किम् यत्तत्पदमनुत्तमम् ।
लोकबंधुर्लोकनाथो माधवो भक्तवत्सलः॥७८॥

अर्थ—सजातीय विजातीय भेद रहित होने से एक [७२८] हैं. माया से अनेक दृष्टि पड़ते हैं. इस कारण नैक [७२९] हैं.यज्ञादिमें सोमरूप होनेसे सव (७३०) हैं; सुख रूप होने से क [७३१] हैं सर्व पुरुषार्थ रूप ब्रह्म विचारके योग्यहैं इस कारण किम् [७३२]हैं स्वतः सिद्ध होने से यत् (७३३) हैं, ज्ञान को वढ़ाने से तत (७३४)हैं, जिस अनुत्तम पदकी मुमुक्षु जन इच्छा करते हैं, अतएव पदमनुत्तमम् (७३५) हैं, लोकन के हिता हितका उपदेश करनेवाला आपसे अधिक कोई हितैषी नहीं, इससे लोकबन्धु (७३६) हैं, सब लोकों से आप प्रार्थनीय हैं, इससे लोकनाथ (७३७) हैं, लक्ष्मीपति होने से माधव (७३८)हैं,भक्तों पर स्नेह करने से भक्तवत्सल (७३९) हैं, ॥ ७८ ॥:—

सुवर्णवर्णो हेमांगो वरांगश्चन्दनांगदी ।
वीरहा विषमः शून्योऽघृताशीरचलश्चलः॥७९॥

अर्थ—सुवर्ण रूप होने से सुवर्ण (७४०) हैं, सुवर्ण

से अंगावयव होनेसे हेमांग (७४१)हैं,सुशोभित अंगों करके युक्त होनेसे वरांग(७४२) हैं, चन्दन के हस्ताभूषण होने से चन्दनांगदी (७४३) हैं, धर्म के हेतु असुरों को मारने से वीरहा(७४४) हैं, सबसे विलक्षण होने से विषम (७४५) हैं, दोष रहित होनेसे शून्य (७४६)हैं,किसीसे कुछ प्रार्थना नहीं करते इसकारण अघृताशी (७४७) हैं, सदा एकरस होने से अचल है (७४८) हैं, पवनरूप से चलते हैं, इसकारण चल (७४९) हैं, ॥ ७९ ॥:—

अमानीमानदो मान्यो लोक स्वामी त्रिलोकधृक्।
सुमेधा मेधजो धन्यः सत्यमेधा धराधरः ॥८०॥

अर्थ—अनात्मवस्तुन में आत्माका अभिमान होने से अमानी(७५०)हैं,सब जीवों को अपनी माया से आत्मदेह का अभिमान देते हैं इससे मानद(७५१)हैं, सबके पूजनीय होने से मान्य (७५२) हैं त्रिलोकीके हर्ता कर्ता होने से लोकस्वामी (७५३) हैं, त्रिलोकीके आधारहोनेसे त्रिलोकधृक्[७५४] हैं, सुन्दर बुद्धि होने से सुमेधा (७५५) हैं, यज्ञ में प्रकट होने से मेधज(७५६)हैं,कृतार्थ होने सें धन्य[७५७] हैं, सत्य बुद्धि होने से सत्यमेधा (७५८)हैं,समस्त अंशों करके सब पृथ्वीको शेषरूपधारणकर धारण करते हैं इस कारण धराधर (७५९)हैं, ॥८०॥:—

तेजोवृषोद्युतिधरः सर्वशस्त्रभृतां वरः ।
प्रग्रहो निग्रहो व्यग्रो नैकशृंगो गदाग्रजः॥८१

अर्थ—द्वादज आदित्यरूप करके वर्षा और तेज फैलानेसे तेजोवृष [७६०] हैं, अति कांति धारण करने से द्युतिधर [७६१]हैं, सब शस्त्रधारियों में श्रेष्ठ हैं, इस कारण सर्वशस्त्रभृतांवर (७६२) हैं, भक्तों से अर्पित पत्रपुष्पादिक ग्रहण करने से अथवा अश्वरूप इन्द्रियों का लगाम की नाईं निग्रह करने से प्रग्रह [७६३] हैं, स्वाभाव करके सबका निग्रह करने से निग्रह (७६४) हैं, भक्तों को मनवांछित देने से व्यग्र [७६५] हैं, वेदादि चारशृंग होने से नकशृंग [७६६) हैं, बलदेवजी के लघुभाई होने से गदाग्रज [७६७] हैं,॥८१॥:—

चतुर्मूर्तिश्चतुर्बाहुश्चतुर्व्यूहश्चतुर्गतिः ।
चतुरात्मा चतुर्भावश्चतुर्वेदविदेकपात् ॥८२ ॥

अर्थ–वासुदेव, संकर्षण, प्रद्युम्न, अनिरुद्ध, ये चार मूर्तिं हैं, अतएव चतुर्मूर्ति [७६८] हैं, चार भुजा धारण करने से चतुर्बाहु (७६९) हैं, शरीर और जीवपुरुष छंद वेद पुरुष, महापुरुष, ये चारों चतुर्व्यूह (७७०) हैं, चारों वर्णों के मनुष्यों को कर्मानुसार गति देने से चतुर्गति [७७१] हैं, मन, बुद्धि, चित्त. अहंकार, ये चारों आपकी आत्मा होने से चतुरात्मा(७७२) हैं, अर्थ. धर्म, काम,

[मोक्ष, ये चारों भाव होने से चतुर्भाव (७७३) हैं, यथावत् चारों वेदों का अर्थ जानने से चतुर्वेदवित् (७७४) हैं, एक पद होने से एकपात् (७७५) हैं, ॥८२॥

समावर्तो निवृत्तात्मा दुर्जयो दुरतिक्रमः।
दुर्लभो दुर्गमो दुर्गो दुरावासो दुरारिहा॥८३॥

अर्थ—संसारचक्र के चलानेवाले हैं, इससे आप समावर्त (७७६) हैं. सब विषयादिकन से पृथक् होने के कारण निवृत्तात्मा (७७७) हैं कोई आप को जीत नहीं सक्ता इस कारण दुर्जय (७७८) हैं. भय से आप की आज्ञा को कोई उल्लंघन नहीं करसक्ता इसकारण दुरतिक्रम (७७९) हैं; दुर्लभ भक्ति कर प्राप्ति होने से दुर्लभ (७८०) हैं; दुःख करके जाने जाते हैं, इस कारण दुर्गम [७८१] हैं, हृदयरूप दुर्ग में निवास करने से दुर्ग [७८२] हैं, योगी जन समाधिद्वारा आप को कठिनता से धारण करते हैं, इससे दुरावास [७८३) हैं, दानवादि दुष्टों के मारने से दुरारिहा (७८४) हैं, ॥ ८३ ॥;—

शुभांगो लोकसारंगः सुतंतुस्तंतुवर्धनः।
इन्द्रकर्मा महाकर्मा कृतकर्मा कृतागमः॥८४॥

अर्थ—ध्यान के योग्य सुन्दर अंग हैं, इस कारण शुभांग(७८५)हैं, लोक में सार वस्तु को ग्रहण करने से

अथवा प्रणवरूप होने से लोकसारंग [७८६] हैं, तंतुकीनाईं विस्तार करते हैं, इसकारण सुतंतु [७८७] हैं, संसारको बढाने से तंतुवर्द्धन (७८८) हैं; बडेकार्य के करने से इन्द्रकर्मा (७८९) हैं;ब्रह्मादि आपके बड़े कार्यहैं, इससे महाकर्मा (७९०) हैं, सब करचुके करना कुछ नहीं इससे कृतकर्मा [७९१]हैं, वेद आपने किया इससे कृतागम (७९२) हैं, ॥ ८४ ॥

उद्भवः सुन्दरः सुन्दो रत्ननाभः सुलोचनः ।
अर्को वाजसनः शृंगी जयन्तःसर्वविज्जयी॥८५॥

अर्थ—अपनी इच्छा करके उत्कृष्ट जन्म धारण करने से उद्भव (७९३) हैं, सौभाग्यशाली होने से सुन्दर (७९४) हैं, कृपालु होनेसे सुन्द(७९५)हैं, रत्न सी सुंदर नाभि होने से रत्ननाभ [७९६) हैं, सुन्दर नयन अथवा ज्ञान होनेसे सुलोचन (४९७] हैं, पूजनीय ब्रह्मादिकों से पूजा के योग्य होने से अर्क (७९८) हैं, इच्छुकों को अन्न देनेसे वाजसन (७९९) हैं, प्रलय में मत्स्यरूप धारण करने से शृंगी (८००) हैं,दुष्टों को जीतने से जयंत (८०१) हैं, बाह्य और आभ्यन्तर सब प्रकार का ज्ञान रखने से सर्ववित् (८०२) हैं, हिरण्याक्षादि असुरों को जीतने से जयी (८०३) हैं, ॥ ८५ ॥

सुवर्णविन्दुरक्षोभ्य :सर्ववागीश्वरेश्वरः ।
महाह्रदो महागर्तो महाभूतो महानिधिः ॥८६॥

अर्थ—देह पर सुवर्ण से विन्दु हैं, इसकारण सुवर्ण विन्दु (८०४) हैं, रागद्वेषादि आपको जीत नहीं सकते इससे अक्षोभ्य (८०५) हैं, सम्पूर्ण वागीश्वर ब्रह्मादिकों के भी ईश्वर हैं, इससे सर्ववागीश्वरेश्वर (८०६) हैं, योगीजन आनंद पूर्वक आपके हृदय में विहार करते हैं इस कारण महाह्रद (८०७) हैं, दुरत्य माया है, आपकी इससे महागर्त (८०८) हैं, तीनों काल आपमें अनवच्छिन्न हैं, इससें महाभूत (८०९) हैं. सम्पूर्ण प्राणी आप में निवास करते हैं. इससे महानिधि [८०१] हैं. ॥ ८६ ॥

कुमुदः कुन्दरः कुन्दः पर्जन्यः पवनोऽनिलः
अमृताशोऽमृतवपुः सर्वज्ञः सर्वतोमुखः ॥ ८७ ॥

अर्थ—पृथ्वी का बोझ उतार आनन्द करने से कुमुद (८११) हैं, सुन्दर फूलों के देने से कुन्दर [८१२] हैं, कुन्द से स्वच्छ अंग होने से कुन्द [८१३] हैं, इन्द्रवत् तापत्रय को दूर कर सब कामनाओं को देते हैं, इस कारण पर्जन्य (८१४] हैं, स्मरणमात्र से पवित्र करते हैं, इससे पवन [८१५] हैं, सदा दूरसे प्रेरणा करते हैं, इससे अनिल [८१६] हैं, अपने आनन्द स्वरूप अमृत को पान करने से

अमृताश [८१७] हैं, मरणरहित शरीर धारण करने से अमृतवपु [८१८] हैं, सबको जानने से सर्वज्ञ (८१९) हैं; सब जगह मुख होने से सर्वतोमुख (८२०) हैं, ॥८७॥

सुलभः सुव्रतः सिद्धः शत्रुजिच्छत्रुतापनः ।
न्यग्रोधोदुंबरोऽश्वत्थश्चाणूरांध्रनिषूदनः ॥८८॥

अर्थ—भक्ति से अर्पित जो पत्रपुष्पादिक उन्हीं से प्राप्ति के योग्य हैं, इससे सुलभ (८२१) हैं. शरणागत का पालना आपका सुन्दरव्रत है, इससे सुव्रत (८२२) हैं स्वतन्त्र होने से सिद्ध (८२३) हैं, देवताओं के शत्रुओं को जीतने से आप शत्रुजित् (८२४) हैं, शत्रुओं को आप तपाते हैं, इससे शत्रुतापन (८२५) हैं, वटवृक्ष के सदृश आपकी माया प्राणियों के ऊपर नीचे फैली हुई है, इससे आप न्यग्रोध (८२६) हैं, आकाश में व्याप्त हैं अथवा अन्नादिक से सबका पोषण करते हैं, इस कारण उदुंवर (८२७) हैं, 'ऊर्ध्वमूलमधः शाखमश्वत्थंप्राहुरव्ययम्' एवंभूत आप अनादि हैं, इससे अश्वत्थ (८२८) हैं. अन्ध्रदेश के चाणूर को मारने हारे हैं; इससे चाणूरान्ध्र-निषूदन (८२९) हैं, ॥ ८८ ॥

सहस्रार्चिः सप्तजिह्वः सप्तैधाः सप्तवाहनः ।
अमूर्तिरनघोऽचिन्त्यो भयकृद्भयनाशनः ॥८९॥

अर्थ—हजारन आपके सूर्यरूप किरण हैं, इससे सहस्रार्चि (८३०) हैं काली, करालि, मनोजवा, सुलोहिता, धूम्रवर्णा. स्फुलिंगिनी, विश्वरुचि, ये आपकी सात जिह्वा हैं. अथवा आप अपनी जिह्वा से इस प्रकार की वाणी बोले हैं, इससे सप्तजित् (८३१) हैं, सात प्रकार की लकड़ी यज्ञमें हैं इससे सप्तैधा (८३२) हैं, सप्ति नामका घोड़ा अथवा अग्नि रूप सात वाहन हैं, इस कारण सप्तवाहन (८३३) हैं. हाथ पांव शरीर के अवयवन करके रहित होने से अमूर्ति (८३४) हैं, पाप रहित हो इससे अनघ (८३५) हैं. आपको कोई यह नहीं जान सके कि यह परमात्मा हैं, इससे अचिन्त्य (८३६)हैं, अधर्मियों को भय देने वाले हैं, इससे भयकृत (८३७) हैं, भक्तों के भय का नाश करते हैं इससे भयनाशन (८३८)हैं, ॥८३॥

अणुर्बृहत्कृशः स्थूलो गुणभृन्निर्गुणोमहान् ।
अधृतः स्वधृतः स्वास्यः प्राग्वंशोवंशवर्धनः ९०॥

अर्थ—अणु से भी सूक्ष्म हैं इस कारण अणु [८३९] हैं, ब्रह्मांड में व्याप्त होने से बृहत् [८४०] हैं, बहुत हलके होने से कृश [८४१] हैं, सबकी आत्मा होनेसे स्थूल (८४२) हैं, सत्वरजतम गुणों के धारण करनेसे

गुणभृत [८४३] हैं, परमार्थ करके गुणों का अभाव हैं, इस कारण आप निर्गुण (८४४) हैं, नित्य स्वच्छ शुद्ध, सूक्ष्म; सर्वज्ञ और अतर्क्य हैं, इससे महान् [८४५] हैं, आप सबको धारण करतेहैंआप निराधर हैं, इससे अधृत (८४६) हैं, आप ही आत्मा को धारण करते हैं, इससे स्वधृत(८४७)हैं,सुन्दर मुख अथवा वेद आपके मुख से निकला इससे स्वास्य (८४८) हैं, ब्रह्मादि आपसे उत्पन्न हुए इससे प्राग्वंश [८४९] हैं, प्रपंच को वढ़ाने से आप वंशवर्द्धन (८५०) हैं, ॥ ९०॥

भारभृत् कथितो योगी योगीशःसर्वकामदः ।
आश्रमःश्रमणः क्षामः सुपर्णो वायुवाहनः॥९१॥

अर्थ—अनन्त रूपसे पृथ्वी का भार धारण करते हैं, इससे भारभृत् (८५१) हैं, सव वेदों ने आपकी महिमा गाई इससे कथित (८५२) हैं; योगसे आप प्राप्त होते हैं, अथवा योग में अपना आत्मा धारण करते हैं. इससे योगी (८५३) हैं, योगी आपकी माया करके विघ्न में पड़ जाते हैं, आप विघ्नरहित हैं, इससे योगीश (८५४) हैं, सम्पूर्ण कामनाओं को देने वाले हैं. इससे सर्वकामद [८५५] हैं, सवके आश्रयरूप होने से आप आश्रम (८५६) हैं; अविवेकियों को संतप्त करते हैं; इससे आप

श्रमण(८५७) हैं, सब प्रजाको चीण करते हो इस कारण चाम [८५८) हैं संसार रूप वृक्षके आप सुन्दर वेद रूप पत्र हैं, छंदांसि यस्य पर्णानि, इस कारण आप सुवर्ण (८५९) हैं, आप के भय से वायु चलती है इससे वायुवाहन [८६०) हैं ॥

धनुर्द्धरो धनुर्वेदो दंडो दमयिता दमः ।
अपराजितः सर्वसहो नियंताऽनियमो यमः ॥१२॥

अर्थ—रामरूप से धनुष धारण किया इससे धनुर्द्धर (८६१)हैं. धनुर्वेद को जानते हैं, इससे धनुर्वेद (८६२) हैं,दुष्टन को दण्डरूपहैं, इससे दण्ड[८६३] हैं. सूर्यरूप अथवा राजा रूप से दुष्ट प्रजा को दंड देते हैं, इससे दमयिता (८६४) हैं, दंडकार्यरूप फल आप हैं, इससे दम (८६५) हैं, शत्रु आपको पराजित नहीं कर सकते और सब कामों मे समर्थ होने से आप अपराजित (८६६) हैं, सब शत्रुओं को सहते हैं, इससे सर्वसह (८६७) हैं. अपने अपने कर्म में सबको लगाने से नियंता(८६८) हैं, आपका कोई नियंता नहीं, इससे अनियम (८६९) हैं, आप सबको नियम पूर्वक चलाते हैं और मृत्युरहित होने से आप यम (८७०) हैं ॥ १२ ॥

सत्त्ववान् सात्त्विकः सत्यः सत्य धर्मपरायणः ।
अभिप्रायःप्रियार्होऽर्हः प्रियकृत प्रीतिवर्द्धनः ।१३

अर्थ—शौर्यादि सत्त्व आप के विद्यमान हैं, इससे सत्यवान् (८७१) हैं, सत्वगुण में स्थिति होने से सात्त्विक (८७२) हैं, श्रेष्ठ कामों को साधन करने से सत्य (८७३) वेदविहित सत्यधर्म में चलने से सत्यधर्म-परायण (८७४)हैं, पुरुषार्थ चाहनेवालेको चाहतेहैं अथवा प्रलयमें जगत आपमें प्रविष्ट होजाता है इससे अभिप्राय (८७५) हैं, उत्तम वस्तुओं के योग्य होने से प्रियार्ह (८७६) हैं; प्रशंसा, स्वागत, आसन, अर्घ.पाद्य, स्तुति नमस्कारादि पूजाओंके योग्य हैं, इससे अर्ह [८७७] हैं, पूजन करने वालोंके प्रिय करने वाले हैं,इससे प्रियकृत् [८७८] हैं, पूजकों की प्रीतिको बढ़ाते हैं, इससे प्रीति-वर्द्धन (८७९) हैं,

विहायजगतिर्ज्योतिः सुरुचिर्हुतभुग्विभुः ।
रविर्विरोचनः सूर्यः सविता रविलोचनः॥९४॥

अर्थ—सूर्यरूप से आकाशमें चलते हैं, इससे विहायस-गति [८८०] हैं, स्वयंप्रकाशित हैं, इससे आप ज्योति [८८१] हैं; शोभायमान कांति होनेसे सुरुचि [८८२] हैं. देवताओं के उद्देश करके हवन किये हुए पदार्थ को खाते हैं, इससे हुतभुक् [८८३] हैं, सब जगह वर्तमान और तीनों लोकोंके प्रभु हैं इससे विभु [८८४] हैं, रसों को खींचते हो इससे रवि [८८५] हैं,सूर्यरूप से सदा

प्रकाशित, इससे विरोचन (८८६) हैं, लक्ष्मी के देने हारे हैं, इस कारण सूर्य (८८७) हैं, सब जगत्‌के पैदा करने हारे हैं इस कारण सविता[८८८] हैं, सूर्य आपका नेत्र है इससे रविलोचन [८८६] हैं

अनन्तो हुतभुग्भोक्ता सुखदो नैकजोऽग्रजः।
अनिर्विण्णःसदामर्षी लोकाधिष्ठानमद्भुतः।९५।

अर्थ – नित्यशुद्धरूप होनेसे अनन्त (८९०) हैं, हवन किये हुए पदार्थोंकोखालेतेहैं इससे हुतभुग्(८९१)हैं. अचेतन प्रकृतिको भोग लगानेसेभोक्ता (८९२) हैं, भक्तोंको मोक्षरूप सुख देनेसे सुखद [८९३] हैं. धर्मरक्षार्थ अनेक जन्म धारण किये. इससे नैकज (८९४) हैं; "हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे" श्रुति कहतीहै सबसे पहिले पैदाहुए इसकारण अग्रज(८९५) हैं, सब कामोंमें परिपूर्ण होनेसे अनिर्विण्ण (८९६) हैं; साधुओंके अपराधको सदा क्षमा करते हैं इससे सदामर्षी (८९७) हैं, सब लोकोंके आधार हो इससे लोकाधिष्ठान (८९८) हैं, आपका रूप शक्ति व्यापार कार्य अद्भुत होने से अद्भुत (८९९) हैं, ॥९५॥

सनात्सनातनतमः कपिलः कपिरव्ययः।
स्वस्तिदःस्वस्तिकृत्स्वस्तिस्वस्तिभुक्स्वस्तिदक्षिणः

अर्थ—सदा एकरस होने से सनात् (९००) हैं,

ब्रह्मादिकों से भी सनातन हैं, इससे सनातनतम (९०१) हैं. वड़वानल के समान रूप होने से कपिल (९०२) हैं, किरणों से जल पीते हैं इससे कपि (९०३) हैं, प्रलय में भी विकार को प्राप्त नहीं होते इससे अव्यय (९०४) हैं. भक्तों को मंगल देने से स्वस्तिद (९०५) हैं कल्याण करते हैं, इससे स्वस्तिकृत् (९०६) हैं; मंगल स्वरूप होने से स्वस्ति (९०७) हैं, मंगलानन्दरूप को भोगते हैं, इससे स्वस्तिभुक् (९०८) हैं, मंगलरूप धर्म को वढ़ाने से स्वस्तिदक्षिण (९०९) हैं, ॥९६॥

अरौद्रःकुंडली चक्री विक्रम्यूर्जित शासनः ।
शब्दातिगः शब्दसहः शिशिरः शर्वरीकरः॥९७

अर्थ—समस्त कामना करके व्याप्त और रागद्वेषादि करके रहित होने से अरौद्र [९१०] हैं, शेषरूप धारण करने से कुंडली (९११) हैं, लोकनकी रक्षा के निमित्त चक्रधारण करने से चक्री [९१२] हैं, वामनरूप में चरणों का विस्तार करने से अथवा अनन्त वीर्य होने से विक्रमी (९१३) हैं, श्रुति स्मृतिरूप आज्ञा के धारण करने से ऊर्जितशासन (९१४) हैं. शब्द से आप की प्रशंसा नहीं हो सक्ती इससे शब्दातिग (९१५) हैं, अपनी २ सामर्थ्यानुसार वेद जाप की प्रशंसा करते हैं, इससे शब्दसह

(११६) हैं; तापत्रय से दग्ध जीवों के आश्रय होने से शिशिर [११७] हैं, संसारियोंको आत्मज्ञानरूपी निशा और ज्ञानियों को संसार रूपी निशा करते हैं, इससे शर्वरीकर [११८] हैं, ॥९७॥

अक्रूरः पेशलो दक्षो दक्षिणः क्षमिणां वरः ।
विद्वत्तमो वीतभयः पुण्यश्रवणकीर्तनः॥९८॥

अर्थ—सब सामग्रियों के उपस्थित होने से, अक्रूर (११९) हैं, कर्म मन वाणी शरीर करके शोभायमान हैं इससे पेशल (१२०)हैं. सामर्थ्यवान् होनेसे दक्ष(१२१) हैं, चतुरोंमें भी चतुर होनेसे दक्षिण (१२२) हैं,क्षमावान योगी और पृथिव्यादिकन में भी श्रेष्ठ हैं इसमें क्षमिणांवर (१२३) हैं, सर्वदा सर्वगोचर होनेसे विद्वत्तम (१२४) हैं, संसारिक भय न होने से वीतभय (१२५) हैं. आपके चरित्र सुनने और नाम कीर्तन करने से पुण्य होता है; इससे पुण्यश्रवणकीर्तन (१२६) हैं. ॥ ९८ ॥

उत्तारणो दुष्कृतिहा पुण्यो दुःस्वप्ननाशनः ।
वीरहा रक्षणः सन्तो जीवनः पर्यवस्थितः॥९९॥

अर्थ—संसार समुद्र से पार लगाते हैं इससे उत्तारण (१२७) हैं, पापों का नाश करते हैं इससे दुष्कृतिहा (१२८) हैं, स्मरण करने वाले को पुण्य करते हैं इससे

पुण्य [१२९] हैं, खोटे स्वप्नोंका नाश करने से दुःस्वप्ननाशन (१३०) हैं; संसारियों को मुक्ति देकर उनके बल को हरते हैं इससे वीरहा (१३१) हैं, सत्वगुण में स्थिति होकर रचा करते हैं, इससे रक्षण [१३२] हैं. सन्मार्गवर्ती संतरूपसे विद्याविनयवृद्धि करते हैं इससे संत १३३ हैं, प्राणरूप करके सब प्रजाको जिवाते हैं इससे जीवन १३४ हैं, चारों ओर से विश्वमें व्यापक होकर स्थित हैं, इससे पर्यवस्थित १३५ हैं, ॥९९॥

अनन्तरूपोऽनन्तश्रीर्जितमन्युर्भयापहः ।
चतुरस्रोगभीरात्मा विदिशोव्यादिशोदिशः १००

अर्थ—अनन्तरूप करके विश्वके चारों ओर स्थित हैं, इससे अनन्तरूप १३६ हैं अपरिमित शक्ति होने से अनन्तश्री १३७ हैं, क्रोध के जीतने से भयापह १३८ हैं, अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष को देते हैं इससे चतुरस्र १४० हैं, ब्रह्मा भी आपके गंभीर आशय को नहीं जानसकें इससे गंभीरात्मा १४१ हैं, अधिकारियोंको विविध फल देने से विदिश १४२ हैं, इन्द्रादिकों को तरह २ की आज्ञा देनेसे व्यादिश १४३ हैं,वेदरूपसे समस्त कर्मफल देनेसे दिश १४४ हैं,॥१००॥

अनादिर्भूर्भुवो लक्ष्मीः सुवीरो रुचिरांगदः ।

जननो जनजन्मादिर्भीमो भीमपराक्रमः॥१०१॥

अर्थ—आपका कोई आदिकारण नहीं है, इससे अनादि (९४५) हैं, भूमि के आधार और त्रिलोकी में व्यापक होने से भूर्भुव (९४६) हैं, त्रिलोकी की संपत्ति होने से लक्ष्मी (९४७) हैं, अच्छी है गति और आज्ञा इससे सुवीर (९४८) हैं शोभायमान हैं हस्ता भूषण जिनके इससे रुचिरांगद [९४९] हैं, नाना प्रकार के जंतुओं को पैदा करने से जनन (९५०) हैं मनुष्य के जन्म के आदि कारण होने से जनजन्मादि (९५१) हैं, दुष्टों का भय के हेतु होने से भीम (९५२) हैं, राक्षसों को भयकारी पराक्रम होने से भीम पराक्रम (९५३) हैं, ॥१०१॥—

आधारनिलयोऽधाता पुष्पहासः प्रजागरः ।
ऊर्ध्वगः सत्पथाचारः प्राणदः प्रणवः पणः॥१०२॥

अर्थ—पृथिव्यादि पञ्च भूतोंके आधार होने से आधारनिलय [९५४] हैं, आप निराधार हैं, इससे अधाता (९५५) हैं, पुष्पवत् संसारको प्रफुल्लित रखते हैं, इससे पुष्पहास (९५६) हैं, सदा जाग्रत अवस्था होने से प्रजागर (९५७) हैं, सबसे ऊपर स्थित हैं, इससे ऊर्ध्वग (९५८) हैं, सत्पुरुषन के मार्ग में चलते हैं; इस कारण

सत्पथाचार (९५९) हैं, परीक्षितादि मरे हुओं को प्राण देने से प्राणद [९६०] हैं, ओंकार रूप होने से प्रणव (९६१) हैं, यथा योग्य व्यवहार करने से पण (९६२) हैं, ॥ १०२ ॥:—

प्रमाणं प्राणनिलयः प्राणभृत् प्राणजीवनः ।
तत्वं तत्वविदेकात्मा जन्ममृत्युजरातिगः॥१०३॥

अर्थ—वेद रूप प्रमाण होने से प्रमाण (९६३) हैं, इन्द्रियां जिनमें लीन होय हैं अतएव प्राणनिलय (९६४) हैं, प्राणों का आप पोषण करे हैं, इससे प्राणभृत(९६५) हैं, प्राणियों को प्राण रूप पवन से जिवाते हैं, इससे प्राणजीवन (९६६) हैं, ब्रह्म रूप होने से तत्व (९६७) हैं, अपने रूप को जानने से तत्ववित (९६८) हैं, एक आत्मा रूप होने से एकात्मा [९६९] हैं, शरीर जन्म लेता है; बढता है, विपरीत होता है, क्षीण होता है, जन्ममृत्यु और बुढापे से दूर हैं, अतएव जन्ममृत्यु जरातिग [९७०) हैं ॥१०३॥

भूर्भुवःस्वस्तरुस्तारः सपिता प्रपितामहः ।
यज्ञोयज्ञपतिर्यज्वा यज्ञांगो यज्ञवाहनः ॥१०४॥

अर्थ—तीनों लोकों के प्राणियों को तारने के हेतु आप नौका रूप हैं, इससे भूर्भुवःस्वस्तरु (९७१)हैं, नाम-

संकीर्तन से संसार को तारते हैं, इससे आप तार [१७२] हैं, सबके पिता हैं इससे सपिता (१७३) हैं, ब्रह्मा के भी पिता होने से प्रपितामह (१७४) हैं, यज्ञरूप होने से यज्ञ (१७५) हैं, यज्ञन के रक्षक होने से यज्ञपति (१७६) हैं, यजमान रूप होने से यज्वा (१७७) हैं, यज्ञ आपका अंग है. इससे यज्ञांग (१७८) हैं, फलहेतु यज्ञों के करानेहारे आप ही हैं इससे यज्ञवाहन (१७९)हैं,

यज्ञभृद्यज्ञकृद्यज्ञी यज्ञभुग्यज्ञसाधनः ।
यज्ञांतकृद्यज्ञगुह्यमन्नमन्नादएवच ॥ १०५ ॥

अर्थ—यज्ञों की रक्षा करने से यज्ञभृत् [१८०) हैं, जगत् के आदि में यज्ञ करनेहारे हैं, इससे यज्ञकृत् (१८१) हैं, यज्ञ करने वारेन की रक्षा करने से यज्ञी (१८२) हैं. यज्ञ के भोक्ता हैं, इससे यज्ञभुक् (१८३) हैं, यज्ञके साधन प्राप्त करने से यज्ञसाधन (१८४) हैं, यज्ञ के समाप्त करने हारे हैं, इससे यज्ञांतकृत् (१८५) हैं, ज्ञानरूपी यज्ञ करने से यज्ञगुह्य [१८६] हैं. सब जीव अन्न के भोग करने से जीते हैं इससे अन्न (१८७)हैं, आप अन्नको खाते हैं, इससे अन्नाद (१८८) हैं, १०५

आत्मयोनिः स्वयंजातो वैखानः सामगायनः ।
देवकी नन्दनःस्रष्टाक्षितीशः पापनाशनः १०६

अर्थ—आप अपने आप प्रगट हुए. इससे आत्मयोनि [९८९] हैं; प्रकृति रूप से जन्म लेते हैं, इससे स्वयं-(९९०) हैं, पृथ्वी खोदकर हिरण्याक्ष को मारने से वैखान (९९१) हैं, सामवेद आपके मुख से निकला, इस से सामगायन (९९२) हैं, देवकीके पुत्र होने से देवकी-नन्दन [९९३] हैं. सब लोकन के कर्त्ता हैं. इससे स्रष्टा [९९४] हैं, पृथ्वी के राजा होने से आप क्षितीश (९९५) हैं, नमस्मरण ध्यान से पापों का नाश करने से आप पापनाशन [९९६] हैं, ॥ १०६ ॥:—

शंखभृन्नंदकी चक्री शाङ्र्गधन्वा गदाधरः ।
रथांगपाणिरक्षोभ्यः सर्वप्रहरणायुधः ॥१०७॥
॥ सर्वप्रहरणायुधोंनमइति ॥

अर्थ—आप अहंकारात्मक पाञ्चजन्य शंख धारण करते हैं, इससे शंखभृत (९९७) हैं, विद्यामय नंदक नाम खड्ग के धारण करने से नंदकी [९९८] हैं; मनस्तत्वात्मक सुदर्शन चक्र के धारण करने से चक्री (९९९) हैं, इन्द्रि-यादि अहंकारात्मक धनुष धारण करने से शाङ्र्गधन्वा [१०००] हैं, बुद्धितत्वात्मक कौमोदकी गदा धारण करने से आप गदाधर (१००१) हैं; रथांग अर्थात चक्र धारण करने से रथांगपाणि (१००२) हैं, काही से चला-

यमान नहीं होते अतएव अक्षोभ्य (१००३) हैं. और सब आयुधन को धारण करते हैं, अतएव सर्वप्रहरणायुध [१००४] हैं, ॥ १०७ ॥

सब आयुध धारण करने हारे आप महापुरुष को वारम्वार नमस्कार है, ॥

इतीदं कीर्तनीयस्य केशवस्यमहात्मनः ।
नाम्नां सहस्रं दिव्यानामशेषेण प्रकीर्तितम् १०८

अर्थ—इस प्रकार कीर्तन करने के योग्य जो महात्मा केशव भगवान ताके ये दिव्य सहस्र नाम पूर्ण रीति से वर्णन किये हैं, ॥ १०८ ॥

य इदं शृणुयान्नित्यं यश्चापि परिकीर्तियेत् ।
नाशुभं प्राप्नुयात्किंचित्सोऽमुत्रेहच मानवः १०९

अर्थ-जो मनुष्य याको नित्य श्रवण करैं अथवा पाठ करैं सो इस लोक और उस लोक दोनों में शुभ फल प्राप्त करैं ॥ १०९ ॥

वेदान्तगो ब्राह्मणःस्यात्क्षत्रियो विजयी भवेत् ।
वैश्यो धनसमृद्धः स्याच्छूद्रःसुखमवाप्नुयात्११०

अर्थ-इसके पाठ करने से ब्राह्मण वेदान्ती, क्षत्रिय समर विजयी, वैश्य धन सम्पन्न, और शूद्र सुखी होय ११०

धर्मार्थी प्राप्नुयाद्धर्ममर्थार्थीचार्थमाप्नुयात् ।
कामानवाप्नुयात्कामी प्रजार्थी प्राप्नुयात्प्रजाम्

अर्थ-इसका पाठ करने से धर्म का अभिलाषी धर्म और अर्थ का अभिलाषी अर्थ, और कामना करनेवाला मनोकामना, और संतान चाहने वाला संतान पावै १११

भक्तिमान्यः सदोत्थायशुचिस्तद्गतमानसः ।
सहस्रं वासुदेवस्य नाम्नामेतत्प्रकीर्तयेत् ॥११२॥

अर्थ—जो भक्तिमान् पुरुष उठकर पवित्र होय भगवान् में मन लगायके वासुदेव सहस्र नामको पाठ करै ॥

यशःप्राप्नोतिविपुलंज्ञातिप्राधान्यमेवच ।
अचलांश्रियमाप्नोति श्रेयःप्राप्नोत्यनुत्तमम् ११३

अर्थ—तो वह मनुष्य बड़ा यश पावै, सजातियों में उच्च गिनाजावै अचल लक्ष्मी प्राप्ति करै और अत्युत्तम कल्याण भी पावै ॥ ११३ ॥

न भयं क्वचिदाप्नोति वीर्यं तेजश्च विंदति ।
भवत्यरोगो द्युतिमान् बलरूपगुणान्वितः ११४

अर्थ—और कभी किसी से न डरे और बड़ा वीर्य तेजस्वी निरोगी कांतिमान् बलरूप और गुणोंसे युक्त होवै ॥ ११४ ॥

रोगार्त्तो मुच्यते रोगाद्बद्धो मुच्येत बन्धनात् ।
भयामुच्येत भीतस्तु मुच्येतापन्नआपदः ११५

अर्थ—रोगी रोग से बन्धुआ बन्धन से, और भयभीत भयसे और आपद्ग्रस्त विपत्ति से छूट जाय ॥ ११५ ॥

दुर्गाण्यतितरत्याशु पुरुषः पुरुषोत्तमम् ।
स्तुवन्नामसहस्रेण नित्यं भक्तिसमन्वितः ११६

अर्थ—जो मनुष्य भक्तिपूर्वक या सहस्र नाम करके पुरुषोत्तम भगवान् को स्तुति करै, सो शीघ्र ही संसार रूपी कठिन दुर्ग से निस्तार होजाय ॥ ११६ ॥

वासुदेवाश्रयो मर्त्यो वासुदेवपरायणः ।
सर्वपापविशुद्धात्मा याति ब्रह्म सनातनम् ११७

अर्थ—जो मनुष्य वासुदेव के आश्रय हैं वासुदेव में परायण हैं सो सम्पूर्ण पापों सेशुद्ध होकर सनातन हो जाते हैं ॥ ११७ ॥

न वासुदेवभक्तानामशुभं विद्यते क्वचित् ।
जन्ममृत्युजराव्याधिभयं नैवोपजायते ॥ ११८॥

अर्थ—वासुदेव के भक्तों को कभी किसी से भय नहीं उत्पन्न होता है, और जन्म मृत्यु रोग बुढ़ापे का भय कभी नहीं होता ॥ ११८ ॥

इमं स्तवमधीयानः श्रद्धाभक्तिसमन्वितः ।
युज्येतात्मसुखं क्षान्तिःश्रीधृतिःस्मृतिकीर्तिभिः

अर्थ—जो श्रद्धाभक्ति पूर्वक इस स्तोत्र का पाठ करै, उसको आत्मसुख, शांति लक्ष्मी धैर्य; स्मृति, और कीर्ति मिलै ॥ ११९ ॥

न क्रोधोनच मात्सर्य्यं न लोभोनाशुभामतिः
भवतिकृतपुण्यानां भक्तानां पुरुषोत्तमे ॥१२०॥

अर्थ—वे सुकृती जीव जो पुरुषोत्तम भगवान् में भक्ति करै हैं, उनको क्रोध, मत्सरता, लोभ, बुरी बुद्धि, कभी नहीं होती है ॥ १२० ॥

द्यौः सचन्द्रार्कनक्षत्रौः खंदिशोभूमहोदधिः ।
वासुदेवस्य वीर्येण विधृतानिमहात्मनः १२१

अर्थ—स्वर्ग, चन्द्रमा, सूर्य, तारागण, आकाश, दिशा समुद्र ये सब महात्मा वासुदेव के पराक्रम से स्थित हैं ॥

ससुरासुरगंधर्वं सयक्षोरगराक्षसम् ।
जगद्वशेवर्ततेदं कृष्णस्य स चराचरम् ॥१२२॥

अर्थ–देवता असुर, गंधर्व यक्ष सांप राक्षस और सब स्थावर जंगम भगवान श्री कृष्ण के आधीन हैं ॥१२२॥

इन्द्रियाणिमनोबुद्धिः सत्वंतेजो बलंधृतिः ।
वासुदेवात्मकान्याहुः क्षेत्रं क्षेत्रज्ञ एवच १२३

अर्थ—इन्द्री, मन, बुद्धि, सतोगुण, तेज, बल, धैर्य, क्षेत्र और क्षेत्रज्ञ अर्थात् शरीर और जीव ये सब वासुदेव की आत्मा हैं, ॥ १२३ ॥

सर्वागमानामाचारः प्रथमं परिकल्पते ।
आचारः प्रथमो धर्म्मो धर्मस्यप्रभुरच्युतः।१२४।

अर्थ—सम्पूर्ण शास्त्रों में आचार प्रथम बनाया है, आचार प्रथम धर्म है, और आचार हीसे प्रभु मिलते हैं॥ १२४

ऋषयः पितरो देवा महाभूतानिधातवः ।
जङ्गमाजङ्गमंचेदं जगन्नारायणोद्भवम् ॥१२५॥

अर्थ—ऋषि, पितर, देवता, सम्पूर्ण पञ्च महाभूत और धातु चराचर और यह जगत नारायण से उत्पन्न हैं॥१२५॥

योगोज्ञानं तथा साख्यं विद्याःशिल्पादिकर्मच ।
वेदाःशास्त्राणि विज्ञानमेतत्सर्वं जनार्दनात्१२६

अर्थ—योग ज्ञान सांख्य विद्या शिल्पादि कर्म वेद शास्त्र विज्ञान ये सब जनार्दन से उत्पन्न हैं ॥ १२६ ॥

एकोविष्णुर्महद्भूतं पृथग्भूतान्यनेकशः ।

त्रींल्लोकान्व्याप्यभूतात्माभुंक्तेविश्वभुगव्ययः ॥

अर्थ—एकही विष्णु सबसे बडे हैं, पृथक् २ प्राणियों में अनेक रूप धरते हैं, तीनों लोकों में व्यापक होकर प्राणियों को भोगते हैं और अविनाशी हैं ॥ १२७ ॥

इमस्तवं भगवतो विष्णोर्व्यासेन कीर्तितम ।
पठेद्यइच्छेत्पुरुषः श्रेयः प्राप्तुं सुखानिच ॥१२८॥

अर्थ—भगवान विष्णु का यह स्तोत्र वेदव्यासजी ने कीर्तन किया है, जो सुख और कल्याण प्राप्ति करने की इच्छा करै, सो इसका पाठ करै ॥ १२८ ॥

विश्वेश्वरमजंदेवं जगतः प्रभवाप्ययम् ।
भजंति ये पुष्कराक्षं न ते यान्ति पराभवम् ॥ १२९॥

अर्थ—विश्वेश्वर अजन्मा महादेव जगत् के हर्ता कर्ता कमल नयन भगवान को जो भजते हैं, उनका तिरस्कार कहीं नहीं होता है ॥ १२९ ॥

॥ अर्जुन उवाच ॥

पद्मपत्रविशालाक्ष पद्मनाभ सुरोत्तम ।
भक्तानामनुरक्तानां त्राताभवजनार्दन ॥१३०॥

अर्थ—अर्जुन बोले, हे कमलपत्रवत् विशालाक्ष ! हे पद्मनाभ ! हे सुरोत्तम ! हे जनार्दन ! अनुराग युक्त आप

भक्तों के निस्तार करने वाले हो ॥ १३० ॥

॥ श्री भगवानुवाच ।

योमांनामसहस्रेण स्तोतुमिच्छति पांडव ।

सोहमेकेनश्लोकेन स्तुत एव न शंशयः॥१३१॥

अर्थ—भगवान बोले हे अर्जुन जो मनुष्य या सहस्रनाम से स्तुति करने की इच्छा करै, तो मैं एक ही श्लोक से प्रसन्न होय जाऊं इसमें संदेह नहीं ॥१३१॥

नमोस्त्वनंताय सहस्रमूर्तये ।

सहस्रपादाक्षिशिरोरुबाहवे ॥

सहस्रनाम्ने पुरुषाय शाश्वते ।

सहस्रकोटीयुगधारिणेनमः ॥ १३२ ॥

अर्थ—त्रिकाल में सम भाव और विनाश रहित आपके अर्थ नमस्कार हैं, सहस्रन आपकी मूर्ति हैं, सहस्रन चरण, सहस्रन आंख, शिर, हृदय, बाहु और सहस्रन नाम वाले जो आपहैं, आपको नमस्कार है, फिर कैसेहैं? आप पुरुष हैं निरन्तर हैं, हज़ारन कोट युगोंके धारण करने हारे हैं,ऐसे जो आपहैं सो आपके अर्थ नमस्कारहै॥

नमः कमलनाभाय नमस्ते जलशायिने ।

नमस्ते केशवानन्त वासुदेव नमोस्तुते ॥१३३॥

अर्थ—हे कमलनाभ! आपको नमस्कार है, हे जलशायी! आपको नमस्कार है, हे केशव! हे अनन्त! आपको नमस्कार है, हे वासुदेव! आपको नमस्कार है ॥ १३३ ॥

वासनाद्वासुदेवस्य वासितंभुवनत्रयं ।
सर्वभूतनिवासोसि वासुदेवनमोस्तुते ॥१३४॥

अर्थ—हे वासुदेव! जीवों की वासना नाश करो; क्योंकि जो वासना भुवनत्रय निवासियों को है, और सब जीवन में तुम्हारो वास है, एसे वासुदेव के अर्थ नमस्कार है ।

नमो ब्रह्मण्यदेवाये गोब्राह्मणाहितायच ।
जगद्धिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमोनमः॥१३५

अर्थ—ब्रह्मएयदेव गौब्राह्मण के हितकारी आपके अर्थ नमस्कार है, जगद्धितकारी श्रीकृष्ण गोविन्द प्रभु के अर्थ नमस्कार है ॥ १३५ ॥

आकाशात्पतितंतोयं यथागच्छतिसागरं ।
सर्वदेवनमस्कारः केशवंप्रतिगच्छति ॥ १३६ ॥

अर्थ-जैसे सब ठौर आकाश से गिरो भयौ जल समुद्रमें पहुँच जाय है तैसे ही चाहे जो देवता को अर्चन वन्दन करौ सब केशव भगवान् को प्राप्त होय जाय है ॥

एषनिष्कंटकः पंथा यत्र संपूज्यते हरिः ।
कुपथं तंविजानीयाद्गोविन्दरहितागमम्।१३७

अर्थ—यही निष्कंटक मार्ग है; यामें हरि भगवान् पूजे जांय हैं, वही मार्ग बुरो है जो गोविन्द रहित है।

सर्ववेदेषु यत्पुण्यं सर्वतीर्थेषुयत्फलम् ।
तत्फलं समवाप्नोति स्तुत्वादेव जनार्दनम्।१३८

अर्थ—सब वेदाध्ययन को पुण्य और सब तीर्थन को फल वा मनुष्यको मिलै जो जनार्दन भगवान् की स्तुति करै ।। १३८ ॥

योनरः पठतेनित्यं त्रिकालं केशवालये ।
द्विकालमेककालं वा क्रूरंसर्वं व्यपोहति॥१३९॥

अर्थ–जो मनुष्य देवालय में बैठके या सहस्रनामको त्रिकाल अथवा द्विकाल अथवा एकही समय पढे तो वाके सब अपराध नष्ट होजांय हैं ॥ १३९ ॥

दह्यन्ते रिपवस्तस्य सौम्याः सर्वेसदाग्रहाः ।
विलीयन्तेच पापानिस्तिवेह्यस्मिन्प्रकीर्तिते १४०

अर्थ–वा मनुष्य के पूर्ण बैरी नष्ट होजांयगे, सम्पूर्ण ग्रह शांति रहेंगे, पाप विलाय जांयगे, जो या स्तोत्र को पाठ करैंगे ॥ १४० ॥

येनध्यातः श्रतोयेन येनायं पठ्यतेस्तवः ।
दत्तानिसर्वदानानि सुराः सर्वेसमार्चिताः॥१४१॥

अर्थ—जाने या स्तोत्र को ध्यान कियो जाने येही पढ्यौ वाने सब दान दिये और सम्पूर्ण देवतानको पूजन कर लियो ॥ १४१ ॥

इहलोके परेवापि नभयं विद्यते क्वचित् ।
नाम्नां सहस्रंयोऽधीते द्वादश्यांममसन्निधौ १४२

अर्थ—द्वादशी के दिन मेरे निकट बैठके जो मनुष्य या सहस्रनाम को पाठ करै, ताको या लोक में तथा पर-लोक में कुछ भी भय नहीं होय ।। १४२ ॥

शनैर्दहति पापानि कल्पकोटिशतानि च ।
अश्वत्थसन्निधौपार्थकृत्वामनसिकेशवम् ।१४३।

अर्थ—हे पार्थ ! पीपल के पास बैठ के और केशव भगवान् को हृदय में ध्यान करके जो मनुष्य पाठ करैंगे, उनके सौ कोटि कल्पन के भी पाप भस्म होय जांयगे १४३

पठेन्नामसहस्रन्तु गवांकोटिफलं लभेत् ।
शिवालये पठेन्नित्यं तुलसीवनसंस्थितः॥१४४॥

अर्थ—जो मनुष्य या सहस्रनाम को पाठ करै, वाको

करोड़ गौदान करने को फल होय, परन्तु शिवालय में बैठै और चारों ओर तुलसी को वन होय ॥१४४॥

नरोमुक्तिमवाप्नोति चक्रपाणेर्वचो यथा ।
ब्रह्महत्यादिकं पापं सर्वं सद्योविनश्यति॥१४५॥

अर्थ—चक्रपाणि भगवान् के वचनानुसार मनुष्य मुक्ति पावै, और वाके सम्पूर्ण ब्रह्म हत्यादिक पाप तत्काल नष्ट होजांय ॥१४५॥

इति श्रीमन्महाभारते शतसाहस्र्यां संहितायांवैया
सिक्या मानुशासनिके पर्वणि दानधर्मे भीष्म
युधिष्ठिर संवादे श्रीविष्णोर्दिव्य
सहस्र नामस्तोत्र समाप्तम् ।

श्री कृष्णार्पणमस्तु शुभम् ।



रामायण (तर्ज राधेश्याम)

- नारद मोह ≡)
- राम जन्म ≡)
- पुष्प वाटिका ≡)
- धनुष यज्ञ ≡)
- परशुराम सम्वाद ≡)
- राम विवाह ≡)
- दशरथ प्रतिज्ञा ≡)
- रामकी कौशल्या मातासे बिदाई ≡)
- बन गमन ≡)
- राम केवट सम्वाद ≡)
- दशरथ मरण ≡)
- चित्रकूटमेंभरतआगमन ≡)
- पंचवटी ≡)
- सीता हरण ≡)
- राम सुग्रीव मिलाप ≡)
- अशोकबाटिकामेंसीता ≡)
- हनूमान लङ्का दहन ≡)
- विभीषणकी शरणागति ≡)
- अंगद रावण सम्वाद ≡)
- मेघनाद की शक्ति ≡)
- कुंभकरण मेघनाद बध ≡)
- सुलोचना सती ≡)
- अहिरावण बध ≡)
- राम रावण युद्ध ≡)
- राज तिलक ≡)
- सीता बनवास ≡)

विनयपत्रिका भा० टी०

गोस्वामी तुलसीदासजी कृत "विनय-पत्रिका" किसीसे छिपी नहीं है पर अत्यन्त कठिन होने से समझ में आना कठिन था। इसलिये इसकी शब्दार्थ बोधिनी टीका बहुत सुगम करदी गई है. मूल्य १।।)

मिलने का पता—

बाबू किशनलाल

बम्बईभूषण प्रेस—मथुरा।